निमाड़ गौरव, कारगिल युद्ध हुतात्मा राजेन्द्र यादव स्मृति

भावांजलि

सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

निमाड़ गौरव, कारगिल युद्ध हुतात्मा राजेन्द्र यादव स्मृति

भावांजलि

लेखक

सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

प्रधान सम्पादक

डॉ. विकास दवे

प्रकाशक

साहित्य अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश शासन

संस्कृति विभाग, भोपाल

निमाड़ गौरव, कारगिल युद्ध हुतात्मा राजेन्द्र यादव स्मृति

भावांजलि

सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

सर्वाधिकार
लेखक एवं प्रकाशकाधीन

प्रकाशक
साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति भवन,
बाण गंगा चौराहा, भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष : 0755 : 2554782

संस्करण
प्रथम 2022

मूल्य
रुपये 150/-

आकल्पन
राकेश सिंह, भोपाल

मुद्रण
जे.एम.डी. ग्राफिक्स
एम.पी. नगर, भोपाल

भारत माँ की अर्चना का पूर्ण विकसित पुष्प : हुतात्मा राजेन्द्र यादव

प्रख्यात रचनाकार जगदंबा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' ने शहीदों के संदर्भ में चर्चा करते हुए यह कहा है कि –

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।'

कहते हैं कि एक बार क्रांतिकारियों का एक दल एक स्थान पर रुका हुआ था। दीवार में एक छोटी सी खिड़की थी। दीवार के एक ओर राम प्रसाद बिस्मिल हितैषी जी की इन दो पंक्तियों को गुनगुना रहे थे–

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा...।

तभी चंद्रशेखर आजाद ने बीच की खिड़की से मुँह बाहर निकाला और बिस्मिल से कहा तुम किस दुनिया में जी रहे हो? जानते हो 'शहीदों की चिताओं पर पड़ेंगे हर बरस ढेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।' बाद में ठहाका लगाते हुए उन्होंने कहा– ''यदि भारत माता की सेवा भी किसी अपेक्षा के साथ की तो क्या वह सेवा है? यह मान कर चलो देश हमारे बलिदान के बदले हमें कुछ नहीं देने वाला किंतु तब भी हमें भारत माता की सेवा में, अपने प्राणों की आहुति भी देना पड़े तो देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

संभवत: क्रांतिकारियों के कहे हुए इन विचारों और उनकी दी हुई प्रेरणा ने भारत के आबाल वृद्ध देशभक्तों में ऊर्जा का संचार कर दिया। तभी तो भारत माता की सेवा में अपने प्राणों की आहुति देने वाली हुतात्माओं की एक लंबी मालिका हमें नजर आती है। तब तो भारत माता को अंग्रेजों की बेड़ियों से

मुक्त कराना था किंतु स्वतंत्र भारत के सामने भी संकट कम नहीं रहे। चाहे वह 1962 का चीन से युद्ध हो या 1965 और 1972 के पाकिस्तान से युद्ध तब से लेकर कारगिल संघर्ष तक भारत के संघर्षों की गाथाएँ इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हैं।

इनमें से कारगिल संघर्ष के समय मध्य प्रदेश के निमाड़ अंचल के हुतात्मा राजेंद्र यादव ने अपने प्राणों की आहुति देकर 30 मई 1999 को आत्म बलिदान कर दिया। भारत और पाकिस्तान की सेना के बीच चल रहे उस निर्णायक युद्ध में हिमालय के 15000 फीट ऊँचे बर्फीले क्षेत्र में गोलियों से छलनी होने के बाद भी 4-5 दुश्मनों को मौत के घाट उतार कर राजेंद्र यादव ने अपने आपको भारत माता के चरणों में अर्पित कर दिया। किसी विचारक ने कहा है- 'भारत माता के चरणों में पूर्ण विकसित फल चढ़ाए जाते हैं। कुम्हलाए और मुरझाए हुए फूल भारत माता की अर्चना में प्रयुक्त नहीं होते।'

शायद राजेंद्र यादव जी ने इसी वाक्य को आत्मसात किया था, तभी तो भरी जवानी में मातृभूमि की अर्चना में अपने जीवन का पूर्ण विकसित खिला हुआ पुष्प उन्होंने अर्पित कर दिया। उनकी अंतिम यात्रा में मध्य प्रदेश के कोने-कोने से राष्ट्र भक्तों का मेला सा सजा था। बाद में भी अनेक आयोजनों में 'वंदे मातरम' और 'भारत माता की जय' के जयकारों के साथ हुतात्मा राजेंद्र यादव को स्मरण किया जाता रहा।

इसी मध्य आधुनिक माध्यमों पर प्रख्यात साहित्यकार सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' ने जब राजेंद्र यादव जी की स्मृति को प्रणाम करते हुए राजेंद्र यादव अमर रहे और जय हिंद लिखा तो श्री राजेंद्र यादव जी की छोटी बहन श्रीमती राधा यादव ने उन्हें भावुक होकर आग्रह किया- 'भैया राजेंद्र यादव जी पर कुछ लिखें।' और देखते ही देखते यह भावांजलि तैयार हो गई। बाद में प्रश्न आया भावांजलि के प्रकाशन का तो किसी ने सुश्री राधा जी को यह सुझाव दिया कि मध्य प्रदेश की यशस्वी संस्कृति मंत्री आदरणीया उषा ठाकुर जी राष्ट्र के गौरव बढ़ाने वाले क्रांतिकरियों और अपने प्राणों का बलिदान करने वाली सैन्य हुतात्माओं के प्रति अत्यधिक श्रद्धा भाव रखती हैं। राधा जी ने माननीय मंत्री जी उषा ठाकुर जी को जब यह निवेदन किया तो उन्होंने एक क्षण की भी

देरी किए बगैर इस भावांजलि के प्रकाशन की सहमति प्रदान कर दी।

मेरे जीवन का भी यह सौभाग्य है कि आदरणीय उषा ठाकुर जी ने यह महत्त्वपूर्ण कार्य साहित्य अकादमी को सौंपा। मध्य प्रदेश शासन की साहित्य अकादमी इस अमृत महोत्सव में क्रांतिकारियों पर तो अनेक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बना ही रही थी, लगा उसी क्रम में इस यज्ञ में एक आहुति इस पुस्तक के प्रकाशन की भी होनी चाहिए। भावांजलि आपके हाथों में देते हुए अत्यंत भावुक मन से मैं आदरणीय उषा ठाकुर दीदी की प्रिय पंक्तियों से अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ। वे सदैव युवाओं के बीच कहती हैं–' श्रीकृष्ण सरल जी के शब्दों में मैं सभी युवाओं से आह्वान करती हूँ,

मैं अमर शहीदों का चारण
उनके यश गाया करता हूँ,
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है
मैं उसे चुकाया करता हूँ।'

और अंत में वह कहती हैं– 'पूजा शहीदों की अगर हम नहीं करेंगे, तो सच मानो वीरता बाँझ हो जाएगी।'

निश्चय ही उनकी इच्छा के अनुरूप यह भावांजलि आप सब को सौंपते हुए हृदय में इतना ही भाव है कि भारत माता की अर्चना में जब तक राजेंद्र यादव जी जैसे पुष्प अर्पित होते रहेंगे। तब तक वीरता कभी बाँझ नहीं हो सकती। वीर प्रसूता भारत माता के चरणों में शत्–शत् नमन करते हुए मैं आप सभी पाठकों को सादर समर्पित कर रहा हूँ– 'निमाड़ गौरव कारगिल युद्ध हुतात्मा राजेंद्र यादव स्मृति भावांजलि।

आपका ही...

–डॉ. विकास दवे
निदेशक, साहित्य अकादमी,
मध्य प्रदेश शासन, भोपाल

आत्म निवेदन...

दादाजी ! ' भाई के ऊपर आपको कोई कविता लिखना चाहिए प्लीज, सिर्फ जय हिंद से काम नहीं चलेगा।'

यह संदेश मोबाइल के मैसेंजर पर अमर शहीद वीर श्री राजेन्द्र यादव की छोटी बहन श्रीमती राधा यादव जी जो भोपाल में ही रहती हैं, ने मुझे 30 मई 2020 को अमर शहीद के गाँव में स्मारक पर हुए आयोजन के अवसर पर मेरे द्वारा अभिवादन (शहीद राजेन्द्र यादव अमर रहे, जय हिंद) के प्रत्युत्तर में लिखा था।

सामान्यत: सोशल मीडिया की प्रतिक्रियाओं पर ऊपरी तौर पर जैसी आम धारणाएँ बनती हैं, मैंने भी संदेश पढ़ा और बात आई-गई हो गई।

इस एक वर्ष के अंतराल में मेरी रचनाओं पर उनके कमेंट्स व लाइक्स भी मोबाइल पर मुझे मिलते रहे, पर उनके लिखे उपर्युक्त संदेश का इस बीच कभी ध्यान ही नहीं आया। अप्रैल 2021 को एक दिन अनायास मोबाइल में बहन राधा जी का वही संदेश सामने दिख गया। सोचा, कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले इस वीर शहीद पर कुछ लिखा जाना देश के तथा विशेष रूप से हमारे निमाड़ क्षेत्र के लिए अति महत्त्वपूर्ण एवं गौरव की बात होगी।

इस प्रकार लगभग एक वर्ष के बाद उनके कहे पर कुछ लिखने का मन बना। इसे मैं अपना सौभाग्य ही समझता हूँ कि मातृभूमि की रक्षा के लिए अन्तिम साँस तक दुश्मन से लड़ते हुए इस वीर रणबाँकुरे जवान राजेन्द्र यादव पर कुछ लिखना मेरे हिस्से में आया।

ज्ञात हो कि इस काव्य गाथा के पूर्ण होने तक अभी भी राधा जी या श्री राजेन्द्र यादव के परिवार के किसी सदस्य से मेरी प्रत्यक्ष भेंट नहीं हो पाई है। मोबाइल के माध्यम से ही उनसे जो संक्षिप्त जानकारियाँ प्राप्त हुईं, उन्हीं को

आधार बनाकर अमर शहीद राजेन्द्र यादव से जुड़ी घटनाओं को अपनी अल्प तर्कबुद्धि से काव्य रूप में ढालने का प्रयास किया है।

वीरवर राजेन्द्र की इस गाथा को सार्थक विस्तार देने के लिए कई स्थानों पर कल्पना का सहारा भी मुझे लेना पड़ा है। मानवीय भावनाओं, संवेदनाओं एवं कारुण्य के चित्रण में अपने जीवनानुभवों के चलते बड़ी सहजता से कलम ने भी पूरे मन से मेरा साथ दिया। यूँ भी स्वानुभूति तत्व की काव्य सृजन में महत्त्वपूर्ण जीवंत भूमिका रहती है। यहाँ स्वानुभूति से मेरा अभिप्राय है दूसरों की वेदना, उनके दुख दर्द तथा कष्टों को स्वयं महसूस कर उनकी अंतर्व्यथाओं से रचनाकार का एकाकार होने से है।

कहा भी गया है कि 'ओस की बूँदे पी कर कोई कवि नहीं हो जाता। किसी की आँख के आँसू पीने पड़ते हैं– कविता के लिए– पराई पीर में तपना पड़ता है तब लेखनी भी पूर्ण समर्पण के साथ सहर्ष सृजनकर्ता का साथ निभाते हुए उसके शब्दों के साथ–साथ कदमताल करती है।

इस राजेन्द्र काव्य गाथा लेखन की एकमात्र प्रेरक बहन राधा यादव जी हैं। अपने भाई के प्रति उनका अथाह प्रेम, उनके लिए कुछ विशेष करने की प्रबल इच्छा के साथ ही उनका मुझसे साधिकार आत्मीय आग्रह, उनके इन्हीं द्रवित भावों ने शारीरिक रुग्णता के बावजूद भी यह रचना मुझसे लिखवा ली। आप सब की जानकारी के लिए बता दूँ कि, कुछ समय पूर्व ही कोरोना रोग से गंभीर रूप से ग्रस्त हो 10 दिन अस्पताल के आइ.सी.यू. वार्ड में उपचार करा कर अत्यंत शारीरिक कमजोरी के चलते पूर्ण विश्राम की स्थिति में हूँ।

इस काव्य गाथा को लिखने में मेरे साथी द्वय आदरेय श्री सुभाष दुबे जी जो भेल हिंदी साहित्य परिषद् भोपाल के अध्यक्ष एवं योग प्रशिक्षक तथा समीक्षक हैं और खरगोन के निवासी मेरे अति प्रिय अनुजवत साथी श्री शरद चंद्र त्रिवेदी जो हिंदी व निमाड़ी के वरिष्ठ कवि, शिक्षाविद तथा ज्योतिष विद्या के पंडित हैं, आप दोनों शुभचिंतक स्नेहीजनों से मुझे इस रचना लेखन में महत्त्वपूर्ण सुझाव मिले, अंतर्मन से आप के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

साहित्य अकादमी दिल्ली से भाषा सम्मान, नरेश मेहता वाङ्मय सम्मान और टैगोर स्कॉलर फैलोशिप सहित शताधिक सम्मानों से विभूषित

लोक एवं आदिवासी कला और साहित्य के अध्येता तथा मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला एवं बोली अकादमी के पूर्व सर्वेक्षण अधिकारी, वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय श्री बसंत निर्गुणे जी जिन्होंने भूमिका स्वरूप अपने शुभाशीष प्रदान किए उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक संपन्न करने के लिए अपने परिवार की भूमिका बहुत महत्व रखती है, बिना उनके सहयोग के एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। मेरे समूचे सृजन कार्यों में बेटी श्रुति, दीप्ति, बहू सुप्रिया तथा बेटे कुन्तल का सदैव भरपूर प्रोत्साहन और सहयोग मिलता रहा है साथ ही मेरे 10 वर्षीय पोते राम श्री दिव्यांश मेरी संजीवनी, मेरी ऊर्जा और मोबाइल कार्य के मेरे विशेष तकनीकी सहयोगी हैं। सभी परिजनों के प्रति मंगल भावनाएँ।

सबसे महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट- मेरे पाठक-वृन्द तथा सृजनधर्मी साथियों, आप सभी के प्रति भी बहुत-बहुत आभार।

साहित्य व सांस्कृतिक अभिरुचि से सम्पन्न मध्यप्रदेश की यशस्वी संस्कृति मंत्री आदरणीया उषा ठाकुर जी के सौजन्य से साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के निदेशक आदरेय डॉ. विकास दवे जी के संपादन में इस पुस्तक का प्रकाशित होना हमारे वीर सैनिकों के प्रति उनके सहज प्रेम एवं श्रद्धाभाव को दर्शाता है। मैं आप दोनों सम्मानियों के प्रति सधन्यवाद हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मित्रों! जिस अवस्था में यह रचना लिखी गयी है, इसमें कुछ कमियाँ व छंदगत विसंगतियाँ रह जाना स्वाभाविक ही है, प्रयास तो शुद्धता का रहा है पर कुछेक अनिवार्य शब्दों के संयोजन में यदि कहीं कुछ लगता है तो वहाँ कथ्य व भाव पर ध्यान देते हुए मुझे सुझाएँ भी।

विश्वास है, अब तक प्रकाशित मेरी पुस्तकों पर जैसी उत्साहवर्धक आप की प्रतिक्रियाएँ, प्यार और प्रोत्साहन मिलता रहा है, इस गौरव गाथा पर भी आपका स्नेह मिलेगा। प्रतिक्रियाएँ अपेक्षित हैं।

धन्यवाद, नमस्कार

-सुरेश 'तन्मय'

भाई के लिए छोटी बहन नर्मदा के उद्गार

मैं अमर शहीद राजेन्द्र यादव की छोटी बहन नर्मदा यादव हूँ। मैं अपने पूजनीय बड़े भैया के साथ बिताए कुछ यादगार पल साझा करना चाहती हूँ। हमारी बहुत छोटी उम्र थी जब उन्होंने आर्मी ज्वाइन की। इसलिए हमेशा आँखों को बस उनके छुट्टी पर घर आने का इंतजार रहता था। जब भी वे छुट्टी पर घर आते थे पूरे गाँव में उनके आने से सबके चेहरे ऐसे नजर आते थे जैसे सूखे पड़े खेतों में बारिश की पहली बूँद आयी हो। उनका स्वभाव इतना सीधा सरल और आकर्षक था कि कोई भी उनसे मिले बिना, बात किए बिना नहीं रह पाता था। बड़े-बुजुर्गों का पैर छू कर आशीर्वाद लेना, बच्चों को प्यार करना, सबसे मिलते-मिलते बड़ी देर हो जाती घर आने में, और मेरी माँ उनके इंतजार में इधर बेचैन होती रहतीं। उनकी मित्र मंडली भी ऐसी कि, उन्हें पूरे समय घेरे रहती, भोजन पानी भी सब एक साथ।

छुट्टी पर जब भाई घर आते थे, मेरी माँ के उस छोटे से घर में अपने आप बहुत सारी जगह हो जाती थी। मेरी माँ का दिल खुशी से फूले नहीं समाता था, अपने सबसे लाडले बेटे को अपने पास पा कर।

भाई की पोस्टिंग श्री लंका, जम्मू कश्मीर, श्री गंगा नगर और भी कई जगह रही है। वे जहाँ भी रहे हमेशा सबकी प्रार्थना में होते थे। मेरी अंतर्रात्मा बहुत खेद में है कि माँ भी आज हमारे साथ नहीं हैं पर आज इतने सालों बाद भाई के लिए माँ की फिक्र ताजा यादों की तरह मेरी आँखों के सामने है। जब-जब तेज बिजली गरजती मेरी माँ अपने बिस्तर पर उठकर बैठ जातीं अपने बेटे की चिंता में कि न जाने वो कहाँ किस हाल में है।

आज ज़माना कितना आगे बढ़ गया। पल भर में फोन और वीडियो कॉल करके जान लेते हैं आपका प्रिय कहाँ है। काश उस समय भी इतना आसान होता जान लेना कि भारत माता की रक्षा में, अपनी सेवा देते मेरे भाई कैसे से हैं और उनकी माँ को पता लग जाता कि इस बारिश बिजली-ठंड में उनके बेटे सलामत है शुक्र हैं कि चिट्ठी के माध्यम से उनके आने की खबर और उनकी सेहत की खबर मिल जाती थी। यही एक जरिया था हम लोगों का उनके करीब रहने का।

सोचती हूँ कितना प्रेम भरा हृदय था भाई का। कितने भी दिन में चिट्ठी आती, सबका हाल-चाल पूछते। वहाँ इतनी दूर भी उनको सबका ख्याल था। उनकी चिट्ठियाँ आज भी हमारे पास सहेज कर रखी हुई हैं। उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा आँखों के सामने है, वो हमेशा हमारी यादों में रहते हैं। कभी नहीं सोचा था कि हम उन्हें इस तरह खो देंगे पर सच ही कहते हैं कहने वाले, 'फरिश्ते आसमान से आते हैं और अपना फर्ज निभा कर चले जाते हैं।' हमें गर्व है हमारे भाई की शहादत पर। तिरंगे में लिपटना सबका नसीब नहीं होता। खुशकिस्मती है हमारी, उनकी अमानत, उनकी प्यारी सी बिटिया मेघा हमारे पास है, हमारे साथ है। उन्हीं की तरह अपने अंदर प्रेम और मिठास लिए वो भी पढ़-लिख कर अपने पापा की तरह बनना चाहती है।

दिल भर आया है। मैं अपने शब्दों को यहीं विराम देते हुए लिखना चाहती हूँ बहुत धन्य हैं हम उनको अपने भाई के रूप में और पाकर उनकी बहन कहलाने में। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मेरे भाई सदैव याद किए जायें उनकी शहादत के लिए।

अमर शहीद राजेन्द्र यादव अमर रहें।

धन्यवाद।

-नर्मदा यादव

भाई के लिए मँझली बहन राधा के उद्‌गार

कारगिल की लड़ाई में अपनी मातृभूमि की आन-बान और शान की खातिर दुश्मनों से लोहा लेते हुए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले वीर अमर शहीद राजेन्द्र यादव की बहन होने के नाते मुझे अपने भाई पर गर्व है। 23 वर्ष हुए उन्हें हमसे बिछड़े पर आज भी हमारे दिलों में उनकी यादें ताजा हैं। हम तीन बहनों में मुझसे उनका कुछ अधिक ही लगाव था। बचपन से ही स्वाभिमानी व जुझारू प्रकृति के राजेन्द्र भाई साहब के मन में सेना में जाकर देश की सेवा करने की एकमात्र इच्छा थी। जिस दिन अट्ठारह ग्रेनेडियर्स में उनका चयन हुआ, उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। परिवार में उस दिन उत्सव वाली स्थिति थी।

बड़े भाई की राह पर जब छोटे भाई ने भी सेना में जाने की इच्छा जताई तो उन्हें मना करते हुए बहुत बड़ी बात कही राजेन्द्र भैया ने कि, 'हम दो भाइयों में से एक मैं भारत माता की सेवा में रहूँगा और तुम हमें जन्म देने वाली माँ की सेवा के साथ पूरे परिवार की देखभाल करोगे।'

बड़े भाई राजेन्द्र के साथ बिताए 25 वर्षों की कई घटनाओं व बातों की यादों में अक्सर मैं खो जाती हूँ, तब ऐसा लगता है कि वे यहीं कहीं मेरे आस-पास ही हैं। मेरे हाथ की बनी दाल-बाटी और खिचड़ी उन्हें बहुत पसंद थी। परिवार से दूर जहाँ-जहाँ भी उनकी पोस्टिंग रही पत्रों के द्वारा सदा वे हमसे जुड़े रहे। उनके पत्रों के उत्तर में इधर के सभी हाल-चाल भेजना मेरे ही जिम्मे था।

एक बार की घटना है, जब लिट्टे संघर्ष के समय उनकी पोस्टिंग श्रीलंका में थी, उनके दाहिने हाथ में गोली लगने तथा आँखों में चोट आने से

तीन महीने वे अस्पताल में वहाँ भर्ती रहे। इस कारण से तब तीन-चार माह तक उनका कोई पत्र नहीं मिलने से हम सब बहुत परेशान थे। माताजी का तो अपने पुत्र की चिंता में बहुत बुरा हाल हो गया था। माँ की हालत देखकर उन्हें दिलासा देने के लिए मैंने भैया की पूर्व में आई हुई एक पुरानी चिट्ठी उन्हें पढ़कर सुना दी, तब जाकर माताजी को चैन आया। इसके बाद जब राजेन्द्र भैया छुट्टी पर घर आए तो अपना यह झूठ मैंने उन्हें बताया। सुनकर बहुत खुश हुए और मेरी पीठ थपथपाते हुए शाबाशी दे कर बोले कि, 'राधा तूने बहुत समझदारी का काम किया मेरी पूर्व में भेजी चिट्ठी माँ को सुनाकर।'

ऐसी कई बातें हैं उनसे जुड़ी हुई जिनके लिए बार-बार मेरे मन में आता रहा कि निमाड़ के कोई लेखक-कवि इन्हें करीने से लिख दें तो उससे हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहे।

हमारे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि म.प्र. शिक्षा विभाग के द्वारा भाई के शौर्य को सम्मान देते हुए उनके नाम से स्कूल का नामकरण- 'अमर शहीद राजेन्द्र यादव हायर सेकेंडरी स्कूल, देवलगाँव-घुघरिया खेड़ी' कर दिया गया है।

उनकी स्मृति के रूप में 'श्रीलंका विशिष्ट सेवा पदक' और उनकी शहादत के बाद मिले विशिष्ट सेना पदक, आज भी गौरव के रूप में हमने सहेज कर रखे हैं।

एक और अभूतपूर्व घटना जिसे याद कर हम आज भी गर्व से भर उठते हैं, यह है कि, भाई ने सेवा में रहते हुए जो सफलता पाई थी उसकी डिग्री सर्टिफिकेट स्वयं कुलपति महोदय हमारे घर प्रदान करने पधारे थे। यह हमारे परिवार के लिए बहुत ही खुशी क्षण थे।

हमारे गाँव घुघरियाखेड़ी (खरगोन) में भैया की स्मृति में 'वीर अमर शहीद राजेन्द्र यादव' के नाम से एक स्मारक भी बनाया गया है। इसमें एक पार्क का निर्माण कर उनकी मूर्ति स्थापित की गई है। यहाँ प्रतिवर्ष उनके शहादत दिवस 30 मई को निमाड़ के कई उच्च अधिकारी, विधायक गण तथा प्रमुख व्यक्तियों के साथ अनेक लोग उन्हें श्रद्धांजलि देने आते हैं। इस दिन अन्य कार्यक्रमों के साथ कवि सम्मेलन का आयोजन भी होता है, जिसमें

राजेन्द्र भैया की और देश भक्ति की कुछ पंक्तियों के साथ अपनी-अपनी कविताएँ सुनाकर कार्यक्रम की इतिश्री हो जाती है।

23-24 सालों के इस लंबे समय में भाई को लेकर मुझे अपने भीतर एक खालीपन महसूस होता रहा है। मैं तो कोई कवि-लेखक हूँ नहीं जो उन पर कुछ लिख पाती। पर मन में विश्वास के साथ मेरी कोशिशें जारी थीं।

संयोगवश एक बार पुरानी किताब-कागजों को सहेजते हुए निमाड़ी कविताओं की 'प्यासो पणघट' नाम की एक पुस्तक हाथों में आ गई। यह किताब सन 80 में छपी थी, तब इसमें लिखी कविताओं को याद करके बचपन में हम बच्चे आपस में खेल-खेल खेलते थे। मन में आया कि, क्यों नहीं इस किताब के लेखक श्री सुरेश कुशवाहा जी से राजेन्द्र भैया पर कुछ लिखने को कहा जाए। उनके मोबाइल की फ्रेंड लिस्ट में मैं पहले से ही जुड़ी हुई थी। तुरंत मैंने उन्हें मैसेज किया, उस समय वे भोपाल में अपनी नौकरी से रिटायर होकर बेटे-बहु के साथ जबलपुर शिफ्ट हो गए थे। कुछ समय के बाद उनका फोन आया और उन्होंने राजेन्द्र भाई के बारे में लिखने की इच्छा जाहिर करते हुए उनके विषय में कुछ बताने और उनसे संबंधित सामग्री भेजने को कहा। मेरी तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा, भगवान को हाथ जोड़कर धन्यवाद देते हुए अखबारों की 3-4 कटिंग उन्हें वाट्सप पर तुरंत भेज दीं। बीच-बीच में मोबाइल पर अपने भाई के बारे में जितना जानती थी सुरेश दादा जी को बताती रही। लगभग एक माह में उन्होंने 521 छंदों में भैया की पूरी जीवन गाथा लिखकर जब मुझे भेजी। उनके लिखे को मैंने पढ़ना शुरू किया तो पूरे समय मेरी आँखों से आँसू लगातार बहते रहे। भाई की इस कविता को मैंने अब तक कई-कई बार पढ़ा है और जब भी पढ़ती हूँ, आँखों से बरबस आँसू बहने लगते हैं।

राजेन्द्र भाई पर लिखा एक-एक शब्द मेरे लिए मोतियों जैसे अनमोल हैं। इसमें हर एक घटना की एक-एक पंक्ति इतनी सच लिखी गई है, लगता है जैसे आदरणीय सुरेश तन्मय दादा जी ने वह सब अपनी आँखों के सामने होते देखा हो। उनके लिए मेरे पास प्रणाम करने के अलावा और कोई शब्द नहीं है।

दादाजी ! इस किताब के रूप में आपने मेरे भाई राजेन्द्र सिंह यादव को

पुनर्जीवित कर हमें एक अनमोल सौगात प्रदान की है। यह किताब जब निमाड़ के युवकों के हाथों में जाएगी तो भारत माता की सेवा करने के लिए सभी नव युवकों को सेना में जाने की प्रेरणा मिलेगी।

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री आदरणीया ऊषा ठाकुर जी के आशीर्वाद से ही म.प्र.साहित्य अकादमी के द्वारा इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका है।

आदरणीया ऊषा ठाकुर जी तथा साहित्य अकादमी के निदेशक आदरणीय डॉ. श्री विकास दवे जी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

जय हिंद, वन्दे मातरम्...!

-श्रीमती राधा यादव
म.न.29, इंडस प्रज्ञा परिसर,
अवधपुरी भेल, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9893345758

अनुक्रम

संपादकीय : डॉ. विकास दवे		03
आत्म निवेदन : सुरेश 'तन्मय'		06
भाई के लिए छोटी बहन नर्मदा के उद्‌गार		09
भाई के लिए मँझली बहन राधा के उद्‌गार		11
भाग–1	प्रवेश...	17
भाग–2	आजी दीदी के बोल	20
भाग–3	राजेन्द्र का जन्म	22
भाग–4	बाल्यकाल	25
भाग–5	सेना में चयन	30
भाग–6	कार्य ग्रहण	32
भाग–7	जबलपुर छावनी में कार्य ग्रहण	36
भाग–8	भोजन को ले कर एक घटना	41
भाग–9	बहन राधा की सूझबूझ	44
भाग–10	सैन्य शिक्षा	46
भाग–11	विवाह पर्व	48
भाग–12	बहन राधा और परिजन	53
भाग–13	धर्मपत्नी प्रतिभा यादव	63
भाग–14	आकस्मिक बुलावा	74
भाग–15	कुलपति जी का आगमन	77
भाग–16	द्रास सेक्टर से...	79
पारिवारिक छायाचित्र		89
अमर शहीद राजेन्द्र यादव : बसंत निर्गुणे		92
लेखक परिचय		96

अमर शहीद राजेन्द्र यादव

भाग-1

प्रवेश...

1
सत्य धर्म साहित्य, कला की पुण्य पावनी
यह निमाड़ की तपोधरा, अतिशय लुभावनी।

2
निर्गुण भक्ति भावधारा, के संत सिंगाजी
माखन दद्दा-साहित्यिक, रामा दादाजी।

3
ओंकारेश्वर, मंडलेश्वर, नर्मदा तीर्थ हैं
माहिष्मति महेश्वर, पौराणिक सुकीर्त है।

4
मात अहिल्या की गादी, की महिमा न्यारी
खंडवा में धूनी वाले, दादा अवतारी।

5
बहुचर्चित नवग्रह मंदिर, खरगोन विराजे
बड़वानी में बावनगजा, सिद्ध मुनि साजे।

6
संतप्रवर बाबा बोन्दरू की, जीवित समाधि
भक्तिभाव से करे विनन्ति, मिटे सब व्याधि।

7

नागराज मंदिर, नागलवाड़ी के तक्षक
जनमानस के साथ-साथ, कृषकों के रक्षक।

8

उष्ण प्रान्त निमाड़, सहज ऊर्जा पाता है
मेहनतकश हर व्यक्ति का, श्रम से नाता है।

9

इसी पुण्य भूमि पर हुआ, एक बलिदानी
सेना में जाने की, बचपन से ही ठानी।

10

वह, यादव राजेन्द्र, भक्त था दुर्गा माँ का
मन में देश भक्ति का भाव, भरा ऊर्जा का।

11

कारगिल में दुश्मन को, पीछे खदेड़ते
हुए शहीद, अंत तक राजन लड़ते-लड़ते।

12

भाव भरा अनुरोध, बहन राधा जी का था
दादाजी! है लिखना तुम्हें, भाई की गाथा।

13

रुग्ण अवस्था में भी, मन ने यह स्वीकारा
चिंतन को फिर मिला, कलम का सुखद सहारा।

14

कृपा शारदे माँ की, रही सदा ही मुझ पर
हेतु मात्र मैं, बसी हृदय में, अक्षर-अक्षर।

15

माँ की कृपा बिना न, एक पग आगे बढ़ते
उनके ही आशीषों से, शब्दों को गढ़ते।

16

साहित्यिक मित्रों से, विनती हाथ जोड़ कर
भावों को स्वीकारें, मात्रिक गणित छोड़कर।

17

टेढ़ी-मेढ़ी राहें, पगडंडियाँ भ्रान्त सी
चली कलम लिखने गाथा, राजेन्द्र कांत की।

18

जैसा विदित हुआ, वैसा ही लिखा गया है
देश प्रेम की राह हमें, जो दिखा गया है।

19

ग्राम घुघरिया खेड़ी धन्य, धन्य यह भूमि
वीर भूमि की माटी, जन-जन ने है चूमी।

20

यह छोटा सा गाँव, आज पहचान बन गया
अमर शहीद राजेन्द्र, देश की शान बन गया।

21

धन्य धरा निमाड़ की, गर्वित होकर फूली
वीर शहीदों की, गाथाएँ झूले झूली।

22

गर्वित मन से, विनत भाव श्रद्धांजलि अर्पित
शब्दों के ये भाव-सुमन, हैं उन्हें समर्पित।

भाग-2

आजी-दादी के बोल

23

बचपन में राजन, स्कूल जाने पर रोता
आजी-दादी का मन, बहुत दुखी तब होता।

24

माँ से कहतीं, बच्चे को क्यों रोज रुलाती
करती हो अनसुना, बात क्यों समझ न पाती।

25

पढ़ा-लिखा कर इसे, कलेक्टर बनवाएगी
नाम ताम्र पत्रों में, क्या तू खुदवाएगी।

26

माँ कहती दादी जी, बचपन का रोना है
समय यही जब, बीज अक्षरों के बोना है।

27

पढ़ने-लिखने से, दुनियादारी आती है
बल कौशल से जंग, तभी जीती जाती है।

28

दादी जी सुनकर ये बातें, चुप हो जातीं
बड़े बुजुर्गों की बातें, सच भी हो जातीं।

29

दादी की जो बात, व्यंग्य में कही गई थी
आज हमारे सम्मुख, वह साकार हुई थी।

30

सचमुच ताम्रपत्र में, नाम खुदा भाई का
हुआ सत्य भाषण, स्वर्गीय दादी-माई का।

31

शहीद शौर्य स्मारक, राजधानी में सोहे
अमर वीर राजेन्द्र, वहाँ भी जन-मन मोहे।

32

वीर शहीद राजन यादव की अमर कहानी
जन-जन के मन बसा रहेगा, ये बलिदानी।

भाग - 3

राजेन्द्र का जन्म

33

पाँव पालने में, सपूत के ही दिख जाते
रुदन-हास्य ऐसे बच्चों की, लय में पाते

34

घर में इनके आते ही, सौभाग्य बरसता
सद्भावों की सब में, बहने लगे सरसता।

35

चकाचौंध वैभव का होना, नहीं जरूरी
समय-समय पर जरूरतें, सब की हों पूरी।

36

मान-पान सम्मान मिले, घर नगर गाँव में
बीते बचपन भले नीम, बरगद की छाँव में।

37

सुख-दुख बाँटें, आपस में हो साझेदारी
बचपन के मित्रों में, निर्मल निश्छल यारी।

38

ऐसे ही एक बालक, जन्मा यादव कुल में
नाम रखा राजेन्द्र, गाँव के बड़े शुकुल ने।

39

पंडित जी ने अच्छे से, पञ्चांग खँगाली
फिर खुश हो दो बार, बजाई अपनी ताली।

44

शिशु है भाग्यवान, कुल का यह नाम करेगा
यश-कीर्ति, सम्मान, अभय मन सभी वरेगा।

41

सिंह वर्ण है शेरों सा, निर्भीक रहेगा
झूठ, अनीति जुल्म जोर, बिल्कुल न सहेगा।

42

दिखलाती ग्रहदशा मुझे, बस इक लाचारी
साल तीसवें में, आएगी विपदा भारी।

43

उसे सह गया अगर, धैर्य रख कर के मन में
नब्बे वर्ष सुखों को, भोगेगा जीवन में।

44

बता रही कुंडली, देशहित काम करेगा
देश द्रोहियों दुश्मन के, ये प्राण हरेगा।

45

किंतु कुटिल ग्रह की, चालें होती हैं भारी
होती है उनकी अपनी, पूरी तैयारी।

46

जो भी हो पर विजय मुकुट, होगा मस्तक पर
पायेगा सम्मान प्रतिष्ठा, जन-गण-मन पर।

47

खुशी मनाओ, बड़े भाग्यशाली हो भाई
पुण्यकर्म से, यह संतान गोद में आई।

48

हर्षित मन मुस्काते हुए, पिता घर आये
बँटी मिठाई वनिताओं ने, मंगल गाये।

49

माह नवम्बर, सोलह तारीख शुभ अवसर में
उन्नीस सौ उनहत्तर को, जन्मा शिशु घर में।

50

रामलाल पितुश्री के मन, खुशियाँ न समाईं
माँ कड़वी देवी की, आँखें नम हो आईं।

51

मात-पिता, बंधु-बांधव, सब खिले-खिले थे
हो प्रफुल्ल मन आपस में, सब गले मिले थे।

52

बुआ गुलाब और, गंगा ने रीत निभाई
शिशु के कपड़े-शक्कर, और बताशे लाई।

53

गोगावाँ तहसील, जिला खरगोन ठाँव था
जन्मस्थान 'घुघरिया खेड़ी' यही गाँव था।

54

शुरू हुई राजेन्द्र सिंह की, बाल क्रीड़ायें
चौकन्ने नयनों से, निरखे दाएँ-बाएँ।

भाग-4

बाल्यकाल

55

घुटनों के बल, चलते-चलते लगे दौड़ने
एक वार में पूजा के, नारियल फोड़ने।

56

लुकाछिपी के खेल, गली आँगन में खेले
थे समूह बच्चों के, चपल चतुर अलबेले।

57

अमराई में पिकनिक, बच्चे कूदे-फाँदे
लिए सहारा इकदूजे के, चढ़ते काँधे।

58

आमों के पेड़ों पर, खेलें छुअन-छुआई
एक डाल से दूजी, कूदें कपि की नाइ।

59

गाँव किनारे इक, छोटी नदिया बहती थी
तैरें, करें किलोल नदी, तब खुश रहती थी।

60

बड़े-बड़ों की नजर, बचा के बच्चे भागे
छुपन-छुपाई, लगे डुबकियाँ, भय को त्यागे।

61

लक्ष्यभेदी राजेन्द्र, शौक था पतंग उड़ाना
माँझे कर तैयार, और फिर पेंच लड़ाना।

62

कौड़ी-कंचे, गिल्ली-डंडा खेल निराले
खो-खो और कबड्डी में, नंबर पहला ले।

63

तीरंदाजी में कुशल, अचूक गोफन के ढेले
गोला-फेंक खेल, अवकाश समय में खेले।

64

तेज बुद्धि राजेन्द्र, पढ़ाई में भी अव्वल
मुश्किल प्रश्नों को भी, कर देता पल में हल।

65

क्लास आठ तक पढ़े, गाँव में ही वे रहकर
नौवीं की सुभाष स्कूल, भोपाल में पढ़कर।

66

ग्यारहवीं तक पढ़े, पुनः खरगोन में आ कर
माँ-बापू खुश, मेधावी सपूत को पा कर।

67

सकल गाँव के थे, राजेन्द्र लाड़ले बेटे
छोटे-बड़े सभी को वे, प्रेमादर देते।

68

बड़े बुजुर्गों के स्नेहाशीष, इन्हें प्राप्त थे
मित्र मंडली में चर्चे, इनके ही खास थे।

69

तिलक-सुभाष, बोस, बिस्मिल झाँसी की रानी
भगतसिंह, बटुकेश्वर, दुर्गावती वीरांगिनी।

70

राजगुरु-सुखदेव, चंद्रशेखर थे बाँके
अंग्रेजी सल्तनत, सामने इनके काँपे।

71

मंगल पांडे, बिरसामुंडा, वीर शिवाजी
मातृभूमि के लिए लगी, प्राणों की बाजी।

72

बख्तावर सिंह, भील ताँतिया, भीमा नायक
हिंदी-रॉबिनहुड- टंट्या मामा परिचायक।

73

बचपन में ही इन वीरों को, सुनते-पढ़ते
तन से मन से प्रतिदिन, राजन गए निखरते।

74

मददगार राजेन्द्र, सदा तत्पर रहते थे
इन वीरों के किस्से, मित्रों से कहते थे।

75

जितने कुशल दक्ष थे, खेल-कूद पढ़ने में
उतने ही श्रमशील, सक्रिय मेहनत करने में।

76

खेती-बाड़ी के भी, कामों में जुट जाते
माँ-बापू के साथ, काम में हाथ बँटाते।

77

एक बार की बात, चल रही थी बखराई
बैल एक छूटा, फिर घर को दौड़ लगाई।

78

एक बैल से होगी कैसे, आज जुताई
हार न मानी राजू ने, एक जुगत भिड़ाई।

79

एक बैल के साथ, दूसरी ओर जुते खुद
करी जुताई पूरी, यह थी त्वरित सूझबूझ।

80

यह जीवटता, धैर्य, बुद्धिबल का सम्मिश्रण
जो सोचा वह किया, पूर्ण हो संकल्पित प्रण।

81

माँ के थे अतिप्रिय राजेन्द्र, लाड़ले बेटे
उनके आदेशों को, कभी नहीं ये मेटें।

82

पिता रहे मनमौजी, बेपरवाह सभी से
माँ ने ही परिवार सँभाला, दाने पीसे।

83

राजनीति की भूल-भुलैया, में भरमाये
मृगतृष्णा के पीछे, निज दायित्व भुलाए।

84

माँ ने पीड़ाएँ सह कर, घर-बार सँभाला
मेहनतकश साहसी, नेह का मधुमय प्याला।

85

तीन बहन दो भाई, परिजन साथ-साथ थे
सजग सतर्क खेल, देखे शह और मात के।

86

खेती घर परिवार, पशु-धन की रखवाली
मिलकर करें सभी, जब बजती माँ की ताली।

87

भरा-पूरा परिवार, अभावों का भी रोना
बछिया का-चौके का, केवल एक भगोना।

88

बिजली नहीं, चिमनियों के मद्धिम उजाले
कैसे काम करे माँ, दिखे सभी तो काले।

89

बारिश में बोरे ओढ़े, माँ खेत में जातीं
बेटे के दिल पर ये बातें, तीर चलातीं।

90

एक बार राजेन्द्र, गए नवग्रह मेले में
खुद के लिए लिया ना, कुछ अपने थैले में।

91

प्रेमचंद की लिखी, कहानी को अपनाते
एक तगारी, कंदील, टार्च और दो छाते।

92

मिट्टी के मटके का ढक्कन, एक भगोनी
सब में अम्मा की सूरत, दिख रही सलोनी।

93

सारी चीजें देख मात, मन में हरसाईं
गले लगाया अम्मा ने, आँखें भर आईं।

94

धीर वीर गंभीर, पीर माँ की पहचानी
जो है सत्य वही, लिखती है कलम कहानी।

भाग-5

सेना में चयन

95

सैन्य चयन का कैम्प, लगा खरगोन शहर में
पहुँच गया राजेन्द्र, दौड़कर प्रथम प्रहर में।

96

सन उन्नीस सौ सत्यासी, जनवरी माह था
अट्ठारह तारीख, हर्ष मन में उछाह था।

97

मन में जो संकल्प, हुआ पूरा विमर्श में
चयन हो गया, अट्ठारह ग्रेनेडियर्स में।

98

दृढ़ इच्छा शक्ति का, साथ दिया ईश्वर ने
मिला ज्वायनिंग का लेटर, राजन के कर में।

99

जिनसे मिली प्रेरणा, जीवन में निर्भय हो
भगतसिंह, आजाद चंद्रशेखर की जय हो।

100

अब अरमान, देश सेवा के होंगे पूरे
वे बचपन के स्वप्न, रहेंगे नहीं अधूरे।

101

पुलकित मन राजन ने, घर को दौड़ लगाई
इंतजार में ही माँ-बापू, बहनें-भाई।

102

खबर सुनी, भाई को सब ने गले लगाया
छोटे श्री ओंकार ने, फिर मिष्ठान्न मँगाया।

103

स्वजनों सहित, मुहल्ले वाले आसपास के
सब मीठे हो गए, सुखद इस खबर खास से।

104

ये पहला अवसर था, सेना में जाने का
इस छोटे से गाँव को, यह गौरव पाने का।

105

छोटे बोले भैया! मैं, पीछे आऊँगा
सेना के गुण गौरव को, मैं भी गाऊँगा।

106

बोले श्री राजेन्द्र, तुम्हें घर पर रहना है
माँ-बापू की देखभाल, तुमको करना है।

107

भारत माँ की सेवा का, दायित्व हमारा
सेवा मात-पिता की करना, कर्म तुम्हारा।

108

बहनों का भी ध्यान, तुम्हें ही तो रखना है
रिश्ते-नातों का निर्वाह, धर्म अपना है।

109

लघु भ्राता ओंकार ने जब, सहमति जताई
सुनकर तीनों बहनें, बापू खुश थी माई।

110

करना है तैयारी, परसों ही है जाना
नगर जबलपुर होगा, मेरा प्रथम ठिकाना।

भाग - 6

कार्य ग्रहण

111

चलो छोरियों! मेरे सँग, चौके में आओ
बनना है कुछ व्यंजन, मेरा हाथ बँटाओ।

112

पहली बार जा रहा, बाहर बेटा मेरा
क्या खायेगा वहाँ, मुझे चिंता ने घेरा।

113

माँ का दिल है, व्यंजन बनने शुरू हो गए
घर के घी के लड्डू - मठरी और गूँझिए।

114

स्वाद बदलने को नमकीन, पँजीरी सेंकी
कितनी डले शकर, बहनों ने चखकर देखी।

115

शुरू-शुरू में वहाँ, लगेगा कैसा खाना
स्वाद बदलने को इनसे, मन को समझाना।

116

घर के और मेस के, भोजन में अंतर है
घर का भोजन, हर दृष्टि से श्रेयस्कर है।

117

धीरे-धीरे आदत होगी, खाते-खाते
स्वाद बदलते रहना, बाहर आते-जाते।

118

थोड़े-थोड़े ये व्यंजन, मित्रों को देना
खाते समय याद बेटे, मेरी कर लेना।

119

नाम तेरा लूँगी, जब भी हिचकी आएगी
तेरी याद की होगी तो, फिर मिट जाएगी।

120

हँसी-खुशी में दो दिन, कैसे बीत गए थे
बीते पूरे जीवन से, ये अलग नए थे।

121

इन दो दिन में, कितनी बातें औ' चर्चाएँ
बचपन से अब तक के, किस्से औ' कथाएँ।

122

हुई तीसरी सुबह, भाई की थी तैयारी
तन उमंग से भरे, किंतु मन सब के भारी।

123

फिर अपने बेटे से, माँ की ममता बोली
करुणा नेह अश्रु जल से, द्वय चक्षु भिगो ली।

124

चिट्ठी-पत्री, खुशी-मजे की, लिखते रहना
कामधाम तबियत का, उसमें सच-सच कहना।

125

भाई-बहनों को बापू को, भूल न जाना
घर के बड़े तुम्हीं हो, अपना फर्ज निभाना।

126

नेम-धरम-मेहनत से, अपनी ड्यूटी करना
संकट आये तो न कभी, तुम उनसे डरना।

127

जीवन में जिसने संघर्ष किए, दुख झेले
उनके आँगन, गौरव गाथाएँ खुश खेले।

128

बेटे का माथा चूमा, दी सुखद दुआएँ
तत्क्षण ही मन में आई, विछोह शंकाएँ।

129

पता नहीं कल से बेटा, अब कहाँ रहेगा
अपने सुख-दुख मन की, बातें किसे कहेगा।

130

राजन के बिन ये घर, सूना हो जाएगा
छुटकी बहन नर्मदा का, मन मुरझायेगा।

131

फिर कुछ सोच मातु, मन ही मन में मुस्काई
है इसमें ही बेटे का सुख, और भलाई।

132

गर्वित मन से पिता, पास बेटे के आये
सिर पर रक्खा हाथ, गले से उसे लगाए।

133

झुक कर चरण छुए, बापू के फिर राजन ने
लगा उन्हें, दशरथ को ज्यूँ वन राम गमन में।

134

पिता-पुत्र दोनों के, सजल नेत्र भर आये
देख दृश्य यह सुखद, सभी परिजन हर्षाये।

135

पिता न बोल सके, करुणार्द्र गला भर आया
अपना भाग्य सराहा, जो बेटा यह पाया।

136

बहनें तिलक कर रही थीं, फिर बारी-बारी
बहन नर्मदा सँग सब ने, आरती उतारी।

137

मित्र गाँव के, आसपास के संगी साथी
हुआ समूह उद्घोष, कहो जय भारत माँ की।

138

भारत माँ के सेवक की, यह प्रथम विदाई
लख, निमाड़ की भूमि, गौरव से गरमाई।

139

चले देश की सेवा करने, हुए रवाना
प्रिय राजेन्द्र यहाँ फिर, लौट-लौट कर आना।

140

जन समूह अपने-अपने, घर वापस आये
घर-घर में राजेन्द्र, वीर की ही चर्चाएँ।

भाग-7

जबलपुर छावनी में कार्य ग्रहण

141

प्रथम प्रशिक्षण शहर, जबलपुर सैन्य छावनी
ग्वारी घाट-पुण्य सलिला, नर्मदा पावनी।

144

पहुँचे श्री राजेन्द्र, ज्वायनिंग खुशी-खुशी दी
पीठ थपथपाई अफसर ने, शाबासी दी।

143

चित्त लगा कर नियमों का, पालन करना है
कड़ी परीक्षाएँ होंगी, न तुम्हें डरना है।

144

समय-सारिणी के अनुसार, तुम्हें चलना है
तन से मन से निडर, शक्तिशाली बनना है।

145

और अहम एक बात, ध्यान में सदा रखोगे
गतिविधियाँ अंदर की, बाहर कह न सकोगे।

146

समयबद्ध सब काम यहाँ, आलस को त्यागें
निर्धारित जो समय, उसी में सोयें-जागें।

147

नियमावली, ध्यान दे कर अच्छे से पढ़ना
मुस्तैदी से दिनचर्या का, पालन करना।

148

भारत माँ की आन-बान, की रक्षा करना
सैनिक का है धर्म, देश हित जीना-मरना।

149

और बहुत सारी बातें, हमको समझाईं
कहा, पूछ सकते हो, जो न समझ में आईं।

150

बजा अलार्म घड़ी देखी, फिर हमसे बोले
थके हुए हो आज, हाथ मुँह अपने धो लें।

151

भोजन का हो गया समय, तुम खाना खाओ
सैनिक वहाँ खड़ा जो, उसको यहाँ बुलाओ।

152

कहा उसे, इनको रहने की जगह बताओ
प्रथम, मेस में ले जाओ, भोजन करवाओ।

153

इन्हें प्रशिक्षण परिसर में, हर जगह घुमाना
और यहाँ की गतिविधियाँ, सारी समझाना।

154

हम सब साथी, और नए जितने आये थे
चले सीनियर के सँग, खुश हो मुस्काये से।

155

मन में खुशी उमंग, अलग थी यहाँ रवानी
इस प्रकार से शुरू हुई, नव सैन्य कहानी।

156

साफ स्वच्छ सुन्दर यह, शिक्षण केंद्र हमारा
थोड़े दिन में लगने लगा, हमें अति प्यारा।

157

इसे स्वच्छ रखने की भी, थी जिम्मेदारी
घास और छटनी पेड़ों की, बारी-बारी।

158

नये-नये रणकौशल के, नव सूत्र सिखाएँ
वीर शहीदों की, गाथाएँ हमें बताएँ।

159

दुर्गम कठिन चौकियों पर, कैसे रहना है
विषम परिस्थितियों को, कैसे खुद सहना है।

160

सरहद से जो लगे देश, उनकी भाषाएँ
अलग प्रशिक्षण सत्रों में, हमको सिखलाएँ।

161

साहस शौर्य पराक्रम के, नित पाठ पढ़ें हम
निडर, तरोताजा, स्फूर्त, रहें कैसे हम।

162

कठिन परेड चले नियमित, अनिवार्य रूप से
डरें कभी ना, बारिश, ठंडी, तेज धूप से।

163

'अनुशासन' है मूलमंत्र, सैनिक जीवन का
नियमबद्धता से बाहर, न चले निज मन का।

164

क्या कीमत है श्रम की, कितना बहे पसीना
आकर सैन्य कैम्प में सीखा, जीवन जीना।

165

दृढ़ता और विश्वास मनोबल, कायम रखना
देश प्रेमहित उद्यत, तनिक न पलक झपकना।

166

रहे बीतते दिन सेना के, गहन प्रशिक्षण
विविध विधाओं पर होते, नित नव अनुवीक्षण।

167

अलग-अलग विषयों के, चलते रहते शिक्षण
भिन्न-भिन्न शहरों में, मिलता रहा प्रशिक्षण।

168

सिक्किम, लेह और, मेरठ में नई विधाएँ
सीखीं हमने कई तरह की, युद्धकलाएँ।

169

अट्ठारह ग्रेनेडियर्स के, संगी साथी
जितना सीखें नया, फूलती उतनी छाती।

170

सीने को फौलाद, बनाते हैं अधिकारी
अस्त्र-शस्त्र संचालन का, अभ्यास भी जारी।

171

चाँदमारी में सीखें, सटीक निशानेबाजी
जो भी अफसर कहे, उसी में अपनी राजी।

172

गुरुकुल ट्रेनिंग कैंपों के, हम नव अभ्यासी
बदन शिथिल होते, पर मन में नहीं उदासी।

173

शाम ढले, अपने बैरक में धूम मचाएँ
नाचें गाएँ, और चुटकुले, गीत सुनाएँ।

174

त्रुटियाँ होने पर अक्सर, दंडित भी होते
खुश हो भूल सुधारें, कभी धैर्य ना खोते।

175

अच्छा करने पर मिलती, जी भर शाबाशी
दंड पिता सा मिले, मिले ममता भी माँ सी।

भाग-8

भोजन को ले कर एक घटना

176

एक बार की घटना, मुझे याद हो आई
पहले सजा बाद में, दिल से मिली बधाई।

177

समुचित पोषण मिले मुझे, अफसर के मन में
ताकत और अधिक हो, मेरे सैन्य बदन में।

178

सामिष भोजन की, उनने इक प्लेट थमाई
खाओ इसमें, ऊर्जा है भरपूर समाई।

179

मैंने कहा कि हूँ विशुद्ध, मैं शाकाहारी
खा न सकूँगा मैं, यह है मेरी लाचारी।

180

हुई अवज्ञा, अधिकारी को लगी चोट थी
पर न कहीं कोई भी, मन में मेरे खोट थी।

181

दिनभर घास उखाड़ोगे, मैदान की सारी
छटनी पेड़ों की करना, यह सजा तुम्हारी।

182

यस सर! कहकर मैं, जुट गया काम में अपने
दोपहरी में, लगा उग्र हो सूरज तपने।

183

सूखा कंठ, बदन से बहे पसीना भारी
पर न मनोबल टूटा, जरा न हिम्मत हारी।

184

अस्तव्यस्त सी घास, पड़े हाथों में छाले
शाम हुई तब तक, सब काम पूर्ण कर डाले।

185

दिनभर नजर रही अफसर की, देख रहे थे
कड़ा परिश्रम लगन, स्वयं ही झेंप रहे थे।

186

आये मेरे पास, कहा, सैनिक सच्चे हो
हो संकल्प धनी, नियमों के तुम पक्के हो।

187

देख हाथ के छाले, करुणा से भर आए
बार-बार स्नेहिल भावों से, गले लगाए।

188

फिर बोले, दो दिन, खुद को आराम कराओ
जाओ स्वास्थ्य केंद्र पहले, औषध ले आओ।

189

ऐसा सैनिक जीवन, समूचा खरा खरा है
सजा और सम्मान, नीतिगत परंपरा है।

190

दिन भर तो अति व्यस्त, रात बिस्तर पर जाएँ
स्वजन-मित्र-परिवार, गाँव की याद सताए।

191

बापू की बेफिक्री से, घर की चिंताएँ
यादों में अम्मा की, आती करुण कथाएँ।

192

बहनों के निश्छल मन की, मुस्कानें घेरें
छोटे के भोलेपन के, प्रिय दृश्य चितेरे।

193

मित्रों के सँग बालपने की, वे क्रीड़ाएँ
एक-एक कर आँखों के, सम्मुख आ जाएँ।

194

घर आँगन खलिहान खेत, गलियाँ चौबारे
आमंत्रण दे बार-बार, सब हमें पुकारें।

195

माँ की सीख भरी, बातों की वे गहराई
पग-पग पर हर लेती हैं, मेरी कठिनाई।

196

स्मृतियों के सागर में, गोते रोज लगाता
यादों को अपनी चिट्ठी में, तब लिख पाता।

197

धीरे-धीरे यही चिट्ठियाँ, बनीं सहायक
इधर-उधर से पत्र मिले, मन के सुखदायक।

198

अनुजा राधा खत में, वो सब लिखती जाती
अम्मा जो भी मन की बातें, उसे बतातीं।

199

बार-बार पत्रों को पढ़कर, राहत पाते
इस प्रकार हम हँसी खुशी से, समय बिताते।

भाग-9

बहन राधा की सूझबूझ

200

श्रीलंका में लिट्टे से थी, छिड़ी लड़ाई
भारतीय शांति सेना भी, सम्मुख आई।

201

झड़पों के दौरान, बाँह में गोली खाई
बारूद से आँखों में भी, आ गई ललाई।

202

अलगावी चीतों से किया, सामना डट कर
मिला विशिष्ट पदक, शांतिसेना का सुख कर।

203

इधर स्वजन, चिट्ठी-पत्री के इंतजार में
खबर न पेपर में, न रेडियो समाचार में।

204

बूढ़े माँ-बापू आकुल-व्याकुल, हो जाते
दो महीने से क्यों न, पत्र बेटे के आते।

205

शत्रु घात में हो, कैसे हम चिट्ठी लिखते
मिला न पत्र देर तक, माँ-बापू चिंतित थे।

206

तब बहना राधा के मन ने, युक्ति निकाली
नई बताकर पहले की, चिट्ठी पढ़ डाली।

207

सुनकर मिटी, हृदय में बैठी आशंकाएँ
यही उपाय एक था, जिससे वे सुख पाएँ।

208

पहले हर पंद्रह दिन में, चिठ्ठी थी आती
कुशलक्षेम संदेश, साथ में अपने लाती।

209

बुद्धिमता यह भी, पाई थी भाई से ही
बहनों में भी गुण आये थे, भाई के ही।

210

इसी बात पर छोटी बहना, उसे चिढ़ाये
बतला दूँगी माँ को, यह कह उसे डराये।

211

ब्लैकमेल करती थी, चीजें हमें दिलाओ
झूठमूठ की चिट्ठी क्यों, ये हमें बताओ।

212

जब समझाई बात, समझ में उसकी आई
गलबहियाँ हो उसके, फिर खुश हो मुस्काई।

213

यह मन का विज्ञान, जरूरी है जीवन में
दुश्चिंताएँ दूर करें, जो आयें मन में।

214

सकुशल श्रीलंका से, हम सब भारत आये
शुरू हुआ फिर दौर, चिट्ठियों के दिन आये।

भाग-10

सैन्य शिक्षा

215

कैंप पचमढ़ी में, चीनी भाषा का शिक्षण
छः महीने के बाद, सभी के करें परीक्षण।

216

कैसे सीमा पर दुश्मन से, करें सामना
साम दाम अरु दंड भेद की, कला थामना।

217

बारीकियाँ संकटकालिन, अभ्यास कराएँ
शत्रु से लड़ने के, दाँवपेंच सिखलाएँ।

218

त्याग तपस्या बलिदानों की, अमर कहानी
देश प्रेम के लिए बनें, सब जीवनदानी।

219

ऊर्जा जोश उमंग भरे, बलिदानी स्वर हों
मार गिराए शत्रु को, बस यह तेवर हों।

220

व्यर्थ न ओढ़ें, चिंताओं के विविध लबादे
ताड़ें शत्रु-मिशन के, उनके कुटिल इरादे।

221

हों अदृश्य हम, एक लक्ष्य पर सटीक निशाने
ध्वस्त करें दुश्मन के, सारे गुप्त ठिकाने।

222

रणकौशल के मंत्र, विविध अति गूढ़ विधाएँ
नये-नये ट्रेनिंग कैम्पों में, हमें सिखायें।

223

हठ योगी जैसी, सैनिक की कठिन साधना
हो दुरूह-दुर्गम पथ, पर मन में विषाद ना।

भाग-11

विवाह-पर्व

224

छुट्टी पर राजेन्द्र अभी, आये ही घर थे
उन्हें नहीं मालूम, यहाँ ऐसे अवसर के।

225

बेटे की शादी को लेकर, खुश मन ही मन
बापू के मन में चल रहा, पूर्व से चिंतन।

226

देखे सत्ताईस बसन्त, राजेन्द्र पूत ने
आया इक प्रस्ताव, सुनाया अग्रदूत ने।

227

शादी का संदेश, दूत ने सुखद सुनाया
माँ बापू को यह प्रस्ताव, बहुत ही भाया।

228

ये वो समय नहीं था, जैसे आज समय है
बच्चे नतमस्तक हो, स्वीकारें जो तय है।

229

बच्चों के सारे निर्णय, बुजुर्ग ही लेते
पुत्र-पुत्री प्रति उत्तर में, बस हाँ कह देते।

230

'किंतु यहाँ राजेन्द्र पुत्र ने, मुँह को खोला
अपने मन की बात पिता से, खुलकर बोला।'

231

मुझे नहीं बंधन में बाँधो, पूज्य पिताजी
मेरा मन कुछ और, है नहीं इसमें राजी।

232

भारत माँ की सेवा का, संकल्प लिया है
पढ़े शास्त्र अब, शस्त्रों वाली ही दुनिया है।

233

मुझे देश के लिए, अनोखे काम है करना
ब्याह-शादी के फंदों में, न अभी है पड़ना।

234

है अरमान देश के हित, मैं कुछ कर जाऊँ
भारत माँ का प्रिय लाड़ला, लाल कहलाऊँ।

235

कृपा करो बापू न अभी, मुझको उलझाओ
थोड़ा समय और, कुछ माह अभी रुक जाओ।

236

बात पिताजी! मैंने सदा, आपकी मानी
मेरे कारण, हो न किसी की जीवन हानि।

237

मेरा गठबंधन हो चुका, आर्मी से है
अंतिम पल तक साथ निभे, स्वीकार उसे है।

238

दुर्गम राह अदृश्य मेरी, मंजिल अनजानी
कहो! करूँ फिर, जानबूझ कर क्यों नादानी।

239

कौन न साहचर्य सुख, चाहेगा जीवन में
किंतु अलग कुछ, देख रहा हूँ अंतर्मन में।

240

भारत माँ का वरद हस्त, मेरे सिर पर है
शादी करना मेरे लिए, बड़ा दुष्कर है।

241

माता के संस्कार, संयमित सुघड़ वीर हूँ
इतने पर भी न मानो, तो मैं हाजिर हूँ।

242

पर बापू थे कहाँ किसी की, सुनने वाले
डाँट डपट कर लगा दिए थे, मुँह पर ताले।

243

बापू की जिद के आगे नतमस्तक हो कर
लगे सोचने मन में, सपने नए सँजो कर।

244

मेलजोल औ' देख-परख की, तारीख तय की
आये घर मेहमान, सगाई पक्की कर दी।

245

जो पहले से ही निश्चित, सब किया धरा था
खुश मन से अब उसे, निभाना परंपरा था।

246

कहे सुने के बाद, विधि ने जो स्वीकारा
निर्मल मन से प्रेम, रहेगा सदा हमारा।

247

जीवन में जो भी जैसे भी, अवसर आये
है प्रभु का आशीष, प्रेम से सभी निभाये।

248

'हल्दी लगी बने दूल्हे, राजेन्द्र राज जी
कुलदेवी, गणेश पूजन, शुभ करें काज जी।'

249

दिशा मुहूर्त देख कर, फिर बारात सजाई
दरवाजे पर बजने लगी, मधुर शहनाई।

250

झंकृत हुई हृदय की वीणा, उठी तरंगें
चलने लगे विचार नये, अपूर्व सतरंगे।

251

'लगुन लगे, वर-वधु से कुछ संकल्प कराये
प्रेमादर से दुल्हन, प्रतिभा को घर लाये।'

252

माँ ने चौक पुराये, खुश हो की अगवानी
लिए आरती बहनों की, मोहक मृदु वाणी।

253

लक्ष्मी-राधा बहनों ने, फिर दिया सहारा
'सुखमय हो भैया के संग, संसार तुम्हारा।'

254

शुरू हुआ अध्याय नया, ग्राहस्थ्य धर्म का
जीवन की अभिनव किताब के, सुखद मर्म का।

255

प्रीति सुधारस पान, तरंगित तन सिहरे से
हुईं सुहानी रातें, दिन आलस्य भरे से।

256

तन-मन मिले, बुनें सपने भावी जीवन के
कितनी जल्दी बीत रहे, पल अपनेपन के।

257

मन में जो, आदर्श, लक्ष्य, दृढ़ निश्चय पाले
प्रेम प्रसंगों में अवरोधक, बनें उजाले।

258

सुख का समय लगे छोटा, यह स्वाभाविक है
खत्म हो चली छुट्टी, स्वीकृत प्रस्तावित है।

259

दुख लगता पत्थर सा, नहीं पकड़ से निकले
बीते सुख, ज्यों रेत बँधी मुट्ठी से फिसले।

260

भीगे नयनों से, प्रियतम की हुई विदाई
शीघ्र लौटता हूँ, प्रिय से आश्वस्ति पाई।

261

पहले जब जाते घर से, होते थे पूरे
अब अर्द्धांगिनी बिना रहेंगे, वहाँ अधूरे।

262

कुछ विशेष इस बार, दिखे टूटी सी लय में।
विदा हुए राजेन्द्र, अधीरता लिए हृदय में।

263

फिर जुट जाना है, अपने नव कर्म क्षेत्र में
अब आना सम्भव, आगामी माह चैत्र में।

भाग-12

बहन राधा और परिजन

264

यह क्या! कानों पर न मुझे विश्वास हुआ है
उड़ा अचानक, प्रिय भाई का प्राण सुआ है।

265

कैसे इस पागल मन को, विश्वास दिलाऊँ
कैसे भाई के तन पर, मैं फूल चढ़ाऊँ।

266

रूठे स्नेहिल भाई-बहन के, रेशम धागे
जागो वीरा! हाथ बढ़ाओ, थोड़ा आगे।

267

मैंने पत्र लिखा था, राखी पर आ जाना
पर ऐसा तो नहीं, तिरंगे के सँग आना।

268

खत में तुमने लिखा, देश प्राणों से प्यारा
गर्दन से भी ज्यादा, प्रिय है गाँव हमारा।

269

जैसा लिखा हुआ था, खत में संरक्षित है
निम्नलिखित पंक्तियाँ, वही सब ये अंकित है।

'गर्दन से प्यारा है गाँव मेरा, दिल से प्यारा देश
इन दोनों की रक्षा करना, यही मेरा उद्देश्य।'

270

खोलो मुख से बोलो कुछ, आँखें झपकाओ
भैया मेरे, पहले जैसे, हँसो-हँसाओ।

271

अग्रज हो तुम तात, हमें ढाँढस बँधवाओ
एक बार उठकर के, मुझको गले लगाओ।

272

छाया है अवसाद, हवा भी मंद हुई है
पुष्प वाटिका आँगन की, निर्गन्ध हुई है।

273

है निस्तब्ध गगन, वसुंधरा में विषाद है
चिड़ियों के कलरव चुप, सबके शिथिल गात हैं।

274

आसपास के पेड़ों के, पत्ते कुम्हलाए
क्षुब्ध क्षितिज, अवसादग्रस्त निस्तेज दिशाएँ।

275

सूरज भी सकुचाया, बदली से वह झाँके
साहस ना शहीद को देखे, आँख मिला के।

276

सोया है सुकुमार, गोद में भारत माँ की
वीर शहीद राजन की, सजी विलक्षण झाँकी।

277

ग्राम-पुत्र ने किया, देश हित तन-मन अर्पण
थी अदम्य इच्छा-शक्ति, मन उज्ज्वल दर्पण।

278

आँखों से खारे पानी के, बहते सोते
ग्रामीणजन सारे आकुल-व्याकुल से रोते।

279

इस दारुण दुख से, भैया अब कौन उबारे
बहना! मैं आ गया, द्वार से कौन पुकारे।

280

यह विछोह संताप, व्यथित तन-मन अधीर है
अब ये जीवन भर के लिए, असाध्य पीर है।

281

आतताई निष्ठुर नृशंस, पाकी उन्मादी
मानव हो मानव की ही, करते बर्बादी।

282

ये सिरफिरे-छली, षड्यंत्री, भीरू, कँगले
ये जहरीले नाग कुटिल, छल करके डस लें।

283

पर भाई! पढ़ कर तुमने इनके कुत्सित मन
गिन-गिन कर जहरीले, नागों के कुचले फन।

284

गोली लगी, हुए घायल, फिर भी न हटे थे
पोजीशन ले किया, सामना वहीं डटे थे।

285

घायल होकर भी, दुश्मन के पाँच दरिंदे
इनके सटीक लक्ष्य से, रह पाए ना जिन्दे।

286

ऐसे शूरवीर भाई की, बहनें हैं हम
गौरव की अनुभूति, नहीं साहस में हैं कम।

287

इम्तिहान बी.ए. का, देने घर आये थे
पेपर अभी-अभी ही, पूरे कर पाए थे।

288

था अवकाश अभी, दस-पंद्रह दिन का बाकी
उधर शुरू हरकतें, दुश्मनों की नापाकी।

289

करगिल में दुश्मन की, सेना है घुस आई
पाकिस्तान और भारत में, छिड़ी लड़ाई।

290

खत्म छुट्टियाँ तुमको, यहाँ शीघ्र आना है
संग इकाई के अपनी, रण में जाना है।

291

मिली सूचना वैसे ही, तत्काल चल दिए
नहीं बताया कारण, क्यों जा रहे किसलिए।

292

जाने के पहले कुछ, मन की हमें बताते
जीवन जीने के कुछ, सूत्र बता तो जाते।

293

नहीं बताया कि, रणभूमि में जाना है
इसीलिए ना की चिंता में, दुख पाना है।

294

पर हम भी बहनें राजन की, नहीं रोकते
विजय तिलक-आरती, प्रभु से तुम्हें न्योतते।

295

माँ-बापू ने पुत्र, बहन ने भाई खोया
अनुज अकेला खड़ा, अश्रुजल नैन भिगोया।

296

पत्नी प्रतिभा से छीना, यह प्रियतम प्यारा
बिन राजेन्द्र हुआ सूना, अब गाँव हमारा।

297

हम सबके सुख की, शीतल सी घनी छाँह थे
सब की प्रगति के, भैया! तुम एक राह थे।

298

सोया है सुकुमार, गोद में भारत माँ की
वीर शहीद राजन की, सजी विलक्षण झाँकी।

299

यह दिन स्मृतियों में, जिंदा तारीख बनेगी
पुण्य पराक्रम की गाथा, इतिहास बनेगी।

300

देख पार्थिव देह, स्वजन सब बिलख रहे थे
एक-एक कर राजन को, कर तिलक रहे थे।

301

हमें छोड़ कर चले, दूसरी किस दुनिया में
क्या गलती देखी भैया, राधा बिटिया में।

302

खेले-कूदे जहाँ वही, आँगन ये अपना
आँखें मूँदे देख रहे हो, कौन सा सपना।

303

खत में प्रथम शब्द, लिखते थे प्यारी बहना
और अंत में लिखते, सदा-सदा खुश रहना।

304

तुम्हीं बताओ कैसे, खुश रह पाएँगे हम
बिना तुम्हारे कैसे, सह पाएँगे यह गम।

305

देखो तो! कितने, वरिष्ठ जन यहाँ खड़े हैं
तुम्हें विदाई देने आए, बड़े-बड़े हैं।

306

बड़ा भाग्य पाया है, तुमने मेरे भाई
मातृभूमि की रक्षा को, निज भेंट चढ़ाई।

307

मित्र उदास खड़े हैं, सारे हो कर गुमसुम
तोड़ो मौन किसी से तो, कुछ बात करो तुम।

308

देखो पूरा गाँव, उमड़ आया दर्शन को
जरा निहारो जन-जन के, इस अपनेपन को।

309

आगत का स्वागत, करने को द्रवित निगाहें
कैसे मिलें मित्र, अब फैला कर दो-बाहें।

310

कितने पुष्प चक्र, चरणों में पड़े तुम्हारे
पुष्पहार अनगिनत, गले में तुमने धारे।

311

सारा जनसमुदाय, व्यथित-आहत है मन में
जय जयकार तुम्हारी, गूँज रही जन-जन में।

312

तुम निमाड़ की माटी के, लाडले पूत हो
गौरव हो निमाड़ के, साहस में अटूट हो।

313

देखो तो ये करुण दृश्य, आँखें तो खोलो
हमसे नहीं, मगर माँ-बापू से तो बोलो।

314

अविरल धार बह रहे हैं, आँसू आँखों से
प्रभु प्रदत्त फल टूट गया, अपनी शाखों से।

315

छाती पीट रो रही मातु, इनको समझाओ
जरा देर को इन्हें, गोदी में आ जाओ।

316

मातृभूमि के लिए, सहर्ष प्राण न्यौछारे
जन्मदायिनी माँ का, भी तो कर्ज उतारें।

317

बार-बार तुमको छू-छू, वह रोती जाती
मार दहाड़ें कभी, पीटती अपनी छाती।

318

माँ के प्राण शुरू से बसे, तुम्हारे मन में
हो निश्चेष्ट बह रहे, आँसू सतत नयन में।

319

नौ महीने तक तुम्हें, गर्भ में पाला-पोसा
छोड़ चले जाओगे यूँ, था किसे भरोसा।

320

बार-बार मूर्छित होती, फिर होश में आती
देख देह निर्जीव फिर, पीटे अपनी छाती।

321

भारत माँ के लिए किया, प्राणों को अर्पित
माँ की ममता कैसे मानें, हम हैं गर्वित।

322

जननी की, जाने के पहले याद न आई
हो जाते वापस, कुछ क्षण को मेरे भाई।

323

सभी साथियों को वापस जाने का कह कर
दी आहुति प्राण की, स्वयं अकेले लड़ कर।

324

शीघ्र लौटता हूँ माँ, कह कर इन्हें गए थे
हम कातर नजरों से, बस देखते रहे थे।

325

लौटो भाई! आ कर, अपना वचन निभाओ
बिना कहे कुछ चुप्पी साधे, यूँ न जाओ।

326

वचन निभाने में, सच्चे तुम रहे सदा ही
फिर क्यों साधा मौन, कर रहे हमें मनाही।

327

हाय देव ये कैसा, तूने खेल रचाया
बीच डगर में छीनी, हमसे शीतल छाया।

328

अभी-अभी ग्राहस्थ्य धर्म की, खुशियाँ पाईं
क्रूर काल की पड़ी, भाई पर क्यों परछाईं।

329

कौन जन्म का फल, कर्मों का यह है भोगा
सूझ रहा ना हमको, अब आगे क्या होगा।

330

हैं असहाय विधि के आगे, बस है रोना
मृत्यु के आगे मानव है, एक खिलौना।

331

जहाँ कहीं भी रहो, सदा खुश रहना भाई
धन्य-धन्य रणवीर, अमरता तुमने पाई।

332

धैर्य बँधाने वाला अब, कोई न यहाँ है
जो था एक, दूर वह हमसे, चला गया है।

333

क्षण भर आँखें खोल, नजर हम पर तो डालो
फिर हर बार की भाँति, अंतिम नई विदा लो।

334

छाती से लग अम्मा को, ठंडक पहुँचाओ
खुशी-खुशी फिर अपने, वीर लोक तुम जाओ।

335

अपलक बापू तुम्हें, निहार रहे हैं भाई
क्यों विधि ने दुर्दिन घड़ी, ये हमें दिखाई।

336

सीने पर पत्थर रख, कड़ा मौन साधे हैं
बिना तुम्हारे आज, हो गए वे आधे हैं।

337

तुम थे तो निश्चिंत, खुली उनकी राहें थीं
भाई मेरे! तुम उनकी, दोनों बाँहें थीं।

338

खोये-खोये से, अपने में भूले-भूले
हो अधीर वे बार-बार, फिर तुमको छू लें।

339

लेटे-लेटे ही प्रणाम, बापू को कर लो
उनकी आशीषें, मन की झोली में भर लो।

340

सिर्फ हमारे नहीं, लाल समूचे निमाड़ के
हो मोती तुम, भारत माँ के कंठ-हार के।।

341

गर्व हमें, अभिमान देश का भाई मेरा
देश भक्त वह शूरवीर, लाड़ला चितेरा।

342

साँस आखिरी तक शत्रु से, जूझ रहे थे
भारत माँ की जय के नारे, गूँज रहे थे।

343

एक अकेले कई दुश्मनों, पर थे भारी
दृढ़निश्चयी साहसी, सिंह-सम इच्छाचारी।

344

दुश्मन की अंतिम गोली, सीने पर झेली
भाई के मुखमंडल पर, मुस्कानें फैलीं।

345

मातृभूमि के नाम, देह भाई ने त्यागी
मिलती उन्हें दिव्य मृत्यु, जो हैं बड़भागी।

346

है विछोह की पीड़ा, पर मन गर्व भरा है
है शहीद भाई मेरा, सौ टंच खरा है।

347

हम आहत हैं, महा दुक्ख मन में है भारी
पर राहत है, मिली अमरता जग में न्यारी।

348

दुर्लभ ऐसी मृत्यु, नहीं सबको मिलती है
मृत्यु नहीं सद्गति, यह मातृभूमि भक्ति है।

349

अमर शहीद राजेन्द्र, युगों तक जीवित रहेंगे
शौर्य कथा निमाड़ के, जन-जन सदा कहेंगे।

भाग-13

धर्मपत्नी प्रतिभा यादव

350

कल रात भर सपने
भयानक नींद में आते रहे
चेहरे विचित्र डरावने
बादल घने छाते रहे।

351

रोते कभी हँसते कभी
चीत्कार मिश्रित शोर में
सहसा नीरवता छा गई
उन्मादियों के दौर में।

352

रात के अंतिम प्रहर में
मायूसी मन में समाई
डरी सहमी सी सहारे को
पिया की याद आई।

353

फिर लगी झपकी, लगा
प्राणेश सिरहाने खड़े हैं
थी विजय मुस्कान मुँह पर
स्वर्ग की सीढ़ी चढ़े हैं।

354

चौंक कर विस्मित जगी
पहली किरण ज्यों भोर में
ढूँढ़ती प्रिय को विकल
इस छोर से उस छोर में।

355

तभी जिंदाबाद वंदे मातरम्
जय घोष के स्वर
जीतकर रण प्रिय तिरंगे में
लिपट कर आ गए घर।

356

हृदय मंदिर में बसा
एक दीप क्यों कर बुझ गया
एक पल में माँग का
सिंदूर मेरा लुट गया।

357

चूड़ियाँ टूटीं मेरा जीवन
हुआ अब व्यर्थ सा है
नाथ के बिन साथ मेरी
जिंदगी का अर्थ क्या है।

358

शुष्क पनघट प्रीत का
सरिता हुई है निर्जला सी
हृदय में तुम थे जहाँ, अब
वहाँ पर छाई उदासी।

359

जिंदगी का बोझ कैसे
ढो सकूँगी मैं अकेले
नाथ! विधना ने भला क्यों
क्रूर ऐसे खेल खेले।

360

हो गई बदरंग मेंहदी
पाँव की बिछिया गईं
चूड़ियाँ पायल, अभागी
अब न काजल सुरमई।

361

सुखद मंगलसूत्र जो
सौभाग्य की पहचान है
यूँ अचानक विलग हो
वह भी स्वयं हैरान है।

362

हूँ अभागन जिंदगी में
सामने कंटकीय पथ है
पार कैसे हो सकूँगी
सारथी के बिना रथ है।

363

कल्पनाएँ मधुर सपने
और अगणित कामनाएँ
अब निराश्रित हो गईं वे
हृदय स्थल को जलाएँ।

364

मिला छोटा सा समय
संयोग के क्षण जो बिताए
अब वियोगी राह लम्बी
और निर्मम विषमताएँ।

365

हे प्रभो! प्रियतम मेरे
मन वचन से निष्पाप थे
प्राण तुमने क्यों लिए
थे ग्रसित किस अभिशाप से।

366

हैं फँसे मझधार में
किससे करें मनुहार स्वामी
दूर खेवनहार नाविक
आ गई सिर पर सुनामि।

367

मातृभूमि के लिए,
सुख-चैन, घर परिवार त्यागे
क्यूँ नजर फिर फेर ली
प्रभु! सेविका-मृत्यु के आगे।

368

एक पल के लिए ही
पलकें जरा सी खोल तो दो
और राहत से भरे
दो बोल मीठे बोल तो दो

369

एक मन प्राणान्त का
किंतु मचा एक द्वन्द्व है
शैशवी सौगात प्रिय की।
वह मेरा अवलंब है।

370

दे गए दायित्व प्रियतम
वह निभाना है मुझे
समय से लड़, जिंदगी
उसकी बचाना है मुझे।

371

पेट में है अंश उनका
गर्भ में जो पल रहा
हो रहा आभास, भ्रूण भी
यह दु:सह दुख सह रहा।

372

कह गए थे नाथ जब
नव शिशु जगत में आएगा
बन पिता हो उल्लसित
मन, गीत मंगल गाएगा।

373

छुट्टी ले कर उल्लसित
मन से तभी घर आऊँगा
गोद में ले कर शिशु को
स्वयं शिशु बन जाऊँगा।

374

पुत्र हो या पुत्री पहले से
न कुछ मन में पला है
एक सी होगी खुशी
निज अंश में प्रभु की कला है।

375

आऊँगा जब, साथ में
होंगे कई मोहक खिलौने
बटेंगे फिर गाँव में
शक्कर बतासे भरे दोने।

376

बँधेंगे झूले सुहावन
हर्षमय दिन आएँगे
मुग्ध मन से साथ में फिर
लोरियाँ मिल गाएँगे।

377

तीन महीने का शिशु भ्रूण
कोख में सुन कुनमुनाया
मातु प्रतिभा ने सहज ही
सांत्वना दे थपथपाया।

378

पुत्र हो तो 'रणविजय'
शुभ नाम उसका यह रहेगा
और बेटी, तो रखेंगे नाम
मोहक विमल 'मेघा'

379

पर छला विधि ने हमें
तुम चिरनिद्रा सो गए हो
किया प्राणोत्सर्ग सीमा पर
अमर तुम हो गए हो।

380

नाथ! स्वामी प्राण प्रिय
मुझको अकेला छोड़ कर
क्यों जा रहे हो दूर मुझसे
मौन हो मुँह मोड़ कर।

381

सुरपुर अकेले ही चले
मुझको भी ले लो साथ में
खोलो नयन फिर प्रेम से
लो हाथ मेरा हाथ में।

382

कैसे कटेगी राह लंबी
स्वर्ग की यूँ ही अकेले
साथ में सुख बाँटते थे
क्यों न ये दुख संग झेले।

383

बस जरा कुछ देर को
दो बोल मन के बोल तो दो
साँस ली जब आखिरी
वह गाँठ थोड़ी खोल तो दो।

384

है पता जय घोष गूँजा
और वंदे मातरम्
देख सुन माँ भारती के
चक्षु भीगे हो गए नम।

385

चाह थी स्वागत करूँगी
आरती ले द्वार पर
था भरोसा मुझे मेरे
वीरवर भरतार पर।

386

हाथ में लेकर तिरंगा
मुस्कुराते आओगे तुम
और विजयी गान खुद
हर्षित हृदय से गाओगे तुम।

387

पर नियति का चक्र ऐसा
काल टाले ना टला
दुश्मनों का कर सफाया
माँग का सिंदूर चला।

388

क्या पता था तिरंगे में
लिपटकर तुम आओगे
छोड़कर हमको बिलखता
यूँ अकेले जाओगे।

389

सहूँगी कैसे कठिन इस
जिंदगी का भार ये
बिन तुम्हारे लगे अब
सूना सकल संसार ये।

390

भावनाएँ हृदय की
निस्तब्ध सी सूनी पड़ीं
कल्पनाएँ सुखद जो थीं
द्वार के बाहर खड़ीं।

391

मैं तुम्हारी प्राण प्यारी
और तुम हो प्राण मेरे
सदा से ही तो बसे
दिल में तुम्हीं अभिमान मेरे।

392

है मुझे अहसास मन में
शहादत का गर्व है
शोक मिश्रित हर्ष किंच्चित
शहीद उत्सव पर्व है।

393

जिंदगी मेरी रहेगी
आपकी अनुगामिनी
तुम मेरे सरताज सूरज
मैं तुम्हारी दामिनी।

394

पोंछती हूँ अश्रु अपने
हृदय में साहस भरूँगी
शिला रख दिल पर विदा
हँसते हुए तुमको करूँगी।

395

तुम जयी रण बाँकुरे
बलिदान व्यर्थ न जाएगा
युगों तक कीर्ति सुयश
जन-जन तुम्हारा गायेगा।

396

'पैर पूजे वीरवर राजेन्द्र के
'प्रतिभा' प्रिया ने
ओढ़ कर फिर मौन आँचल
लगी खुद को ही मनाने।'

397

अश्रुजल से दे रही
श्रद्धांजलि प्रिय को विनत हो
सँजोकर दिल में रखूँगी
स्मृति विगत अपनी रही जो।

398

स्वर्ग में राजेन्द्र मेरे
वीरवर सुख पाएँगे
देव-मुनि-गंधर्व भी
गुणगान इनके गाएँगे।

399

'शहीद श्री राजेन्द्र सूक्ष्म
स्वरूप में निर्लिप्त से थे
मोह माया राग द्वेषादि से
अब वे रिक्त से थे।'

400

'निर्विकारी आत्मा में
शुद्ध दृष्टा भाव थे
प्रिय स्वजन सहचरी सुमुखि
घर खेत गलियाँ गाँव थे।'

401

सुख-दुखों से परे
समता भाव अदृश अनाम में
वीरवर राजेन्द्र हर्षित
विराजे निज धाम में

भाग-14

आकस्मिक बुलावा

402

दस-पंद्रह दिन अभी, बचे छुट्टी के बाकी
इसी बीच में सैन्य कैंप से, आई पाती।

403

जैसे भी हो शीघ्र, रवाना तुम हो जाओ
हर हालत में कल, संध्या तक कैंप में आओ।

404

फिर विश्वासघातियों ने, सीमा लाँघी है
कारगिल में घुस कर, खुद मृत्यु माँगी है।

405

अट्ठारह ग्रेनेडियर्स के, वीर सिपाही
निकलेगी परसों अपनी, यह पूर्ण इकाई।

406

द्रास पोस्ट पर, निश्चित है अपनी तैनाती
सीमाओं की रक्षा में, जुड़ना है साथी।

407

जैसे मिली सूचना, राजन झट से तत्पर
छुट्टी में भी सैनिक, मन से रहे ड्यूटी पर।

408

चले गाँव से, समर क्षेत्र में बिना बताए
अकस्मात क्यों गए, सभी आश्चर्य जताये।

409

श्रीलंका के बाद, दूसरा यह अवसर है
उत्साही हलचल, मन में चल रही प्रखर है।

410

पहुँचे वे भोपाल, स्वजन मिलने को आए
बड़ी बहन लक्ष्मी, छोटी राधा मन भाये।

411

मनपसंद राजन के, दाल-बाफले लाई
और भी कुछ है डिब्बों में, खा लेना भाई।

412

पाँव छुए बहनों के, आशीर्वाद लिया था
ट्रेन खड़ी टेशन पर, इतना समय दिया था।

413

बहन लक्ष्मी ने पूछा, थोड़े दिन हैं बाकी
क्यों जा रहे अचानक, आने वाली राखी।

414

बस मुस्कुरा दिए भाई, कुछ भी न कहा था
जंग जीतने चला, भावना में न बहा था।

415

लक्ष्मी दीदी व्याकुल सी, कुछ ताक रही थीं
भाई के मन के भीतर, यूँ झाँक रही थीं।

416

संशय भाव प्रबल, दीदी के अंतस्थल में
पता नहीं क्यों विचलित, होकर लगा मचलने।

417

बड़ी बहन ने माँ का, प्यार दिया भाई को
समझ रही थी, उसके मन की गहराई को।

418

भरे नयन से फिर, भैया को गले लगाया
सचमुच मातृ हृदय ने, छिपा हुआ कुछ पाया।

419

तीव्र घ्राण शक्ति होती है, महिलाओं में
और पारखी, छिपे हुए मन के भावों में।

420

पहुँचाते हर बार, उन्हें हँसते-मुस्काते
क्यों इस बार निराशाजनक, भाव हैं आते।

421

डरा हुआ क्यों, अनहोनी शंका से मन है
क्या भाई से सचमुच, यह आखिरी मिलन है।

422

दस मिनटों की भेंट, आखिरी हुई विदाई
सिग्नल हुआ, ट्रेन ने कर्कश सीटी बजाई।

423

रहे देखते, बड़ी दूर तक हाथ हिलाते
लगा कि छिपा रहे थे, वे मन में कुछ बातें।

424

भाई के सकुशल रहने की, करी दुआएँ
चिंतित मन से, सभी स्वजन वापस घर आये।

भाग-15

कुलपति जी का बी.ए. की डिग्री देने घर आना

425

सेना में जाने से, जो थी छूटी पढ़ाई
उसे पूर्ण करने को, बने छात्र स्वाध्याई।

426

अभूतपूर्व, अद्वितीय, सत्य यह बात अनोखी
अ-विश्वसनीय घटना, पर शत-प्रतिशत चोखी।

427

मई माह में इम्तिहान, जो दिया गया था
बी.ए. द्वितीय श्रेणी में, राजन पास हुआ था।

428

देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के, मान्य कुलपति
शिक्षाविद-श्री, इनकी सहज सरल मुखाकृति।

429

बीए की डिग्री खुद, देने गाँव में आए
पहले नतमस्तक, प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाए।

430

हैं राजेन्द्र नहीं, स्वजनों को भेंट थमाई
धन्य गाँव की मिट्टी, कहकर शीश लगाई।

431

माँ-बापू को साड़ी, श्रीफल शाल भेंट की
पत्नी प्रतिभा को डिग्री सौंपी बी ए की।

432

अतुलनीय अभिनव, गौरवशाली ये पल थे
यह आत्मीय सम्मान, न कोई उत्सव-जलसे।

433

कुलपति-छापरवाल-भरत जी का अभिनंदन
वीरों के सम्मान हेतु है, आपका वंदन।

434

एक घोषणा, अमर शहीद राजेन्द्र नाम से
पदक एक प्रतिवर्ष मिलेगा, नेक काम से।

435

यह होता है, अमर शहीदों का वैभव-धन
मातृभूमि पर जब करते हैं, तनमन अर्पण।

436

यश कीर्ति सम्मान स्वयं, घर चलकर आते
मुक्त कंठ से प्रेम-प्यार, जन-जन से पाते।

भाग-16

द्रास सेक्टर से तोलोलिंग प्रयाण व शहादत

437

अट्ठारह ग्रेनेडियर्स के, वीर सिपाही
चली द्रास से, तोलोलिंग की ओर इकाई।

438

बर्फीली चोटियाँ, साथ में गहरी खाई
बहुत कष्टप्रद, तोलोलिंग की खड़ी चढ़ाई।

439

दुश्मन पहले से ऊपर है, आँख गड़ाए
कभी कोहनी के बल, कभी खड़े चल पाएँ।

440

काँधे पर असलहा, रसद का थैला टाँगे
चढ़ते चले जा रहे वीर, लक्ष्य को साधे।

441

सामरिक दृष्टि से, चोटी तोलोलिंग की
चर्चित अहम महत्त्वपूर्ण, है इसकी गिनती।

442

कई दिनों पहले से, दुश्मन जमा यहाँ थे
बंकर बना रखे रक्षा को, जहाँ-तहाँ थे।

443

वहीं भारतीय सैनिक, इनकी नजर बचाते
चट्टानों की ओट लिए, इनसे भिड़ जाते।

444

माइनस डिग्री की, ये कड़ी ठंड को सहते
ऊँचाई पंद्रह हजार फीट, धरा सतह से।

445

भारतीय जाँबाज, जीतने के जुनून में
देख शत्रु को गर्मी आती, जमे खून में।

446

अट्ठारह ग्रेनेडियर्स का, एक सिपाही
श्री बंशीधर वर्मा ने, यह बात बताई।

447

वर्मा, राजन से पीछे, कुछ दूरी पर थे
राजन का संदेश मिला था वायरलेस से।

448

हुए शहीद मेजर, 'राजेश सिंह अधिकारी'
यहाँ सामने दुश्मन की, संख्या है भारी।

449

मिला हमें आदेश अभी, पीछे हो जाओ
हमने कहा कि, राजन तुम भी वापस आओ।

450

मना किया राजन ने, पीठ न दिखलाऊँगा
अंतिम साँसों तक, दुश्मन से टकराऊँगा।

451

तीस मई की रात, खिन्न मन लिए उदासी
मृत्यु, वीर को आँचल में, लेने को प्यासी।

452

लुक छिप कर चल रही, वहाँ पर गोलाबारी
एक अकेला राजन था, दुश्मन पर भारी।

453

सम्मुख सौ से ऊपर, दुश्मन थे वे घाती
और इधर राजन की, एक अकेली छाती।

454

था अदम्य साहस, मन ही मन में मुस्काये
भारत माँ की जय के, साथ सामने आए।

455

किये वार पर वार, शत्रु-दल समझ न पाए
शूरवीर ने कई बैरी, यमपुर पहुँचाए।

456

झेले वार दुश्मनों के, सीने पर हँस कर
एच.एम.जी.गन पकड़े रहे, हाथ में कस कर।

457

भूमि को चूमा, मृत्यु भी देख के रोई
पर विधि का विधान, टालता कैसे कोई।

458

राजन की स्मृतियों में, चित्र पूर्व के आये
बचपन से अब तक की, बीती सब घटनाएँ।

459

पार्थिव देह उठाई तब, पोजिशन लिए थे
लड़ते-लड़ते प्राण, देश के लिए दिए थे।

460

मृत्यु भी असहाय, नहीं था उसके बस में
खुशी मनाए या कि शोक, वह असमंजस में।

461

मृत्यु न कष्ट, जीव को अपने से पहुँचाए
जीवन भर के कृत्य, सजीव हो उसे रुलाएँ।

462

पर सुकृत्य धारी राजन, क्योंकर रोएगा
यहाँ रो रही मृत्यु, शांत वह अब सोएगा।

463

प्राणों के बदले, मृत्यु ने दिया अमर वर
अमर हो गए वीर, शहीद राजेन्द्र धरा पर।

464

सैन्य वर्दी में प्राप्त, देश सेवा का गौरव
सेना पदक विशिष्ट, मिला यह अनुपम वैभव।

465

सोलह जून को देह, शहीद की गाँव में आई
महू कैंट से कर्नल के संग, सैन्य सिपाही।

466

उमड़ा जन सैलाब, पूर्व से इंतजार में
दर्शन को सब खड़े, संयमित हो कतार में।

467

मंत्री-विधायक-उप मुख्यमंत्री, जिला कलेक्टर
श्रेष्ठि-वर्ग, नर-नारी और वरिष्ठ ऑफिसर।

468

वंदे मातरम, भारत माँ की जय के नारे
जय जयकार, वीर राजन की सभी उचारें।

469

खंडवा, बड़वानी, इंदौर शहर के वासी
गोगाँवा, खरगोन, महेश्वर, ग्राम निवासी।

470

गाँव-गाँव से उमड़ पड़े, सारे नर-नारी
पुलिस फोर्स सँग में, उनके वरिष्ठ अधिकारी।

471

दर्शन को आतुर थी, सब की व्यग्र निगाहें
पार्थिव देह वीर की, खुली जगह में लाये।

472

भारी जन समुदाय, नीर नैनों में भर कर
श्रद्धांजलि दे रहे, निकट उनके पहुँच कर।

473

जोश-जुनून बाहर, भीतर तो दर्द भरा है
सब के दिल में अंकित, राजन का चेहरा है।

474

अति विशिष्ट, सम्मान्य जनों ने पुष्प चढ़ाए
भावांजलि दे राजन के, गौरव-गुण गाए।

475

जो समर्थ थे उनने, कुछ संकल्प सुझाये
स्मृति स्वरूप स्मारक का इक निर्माण कराएँ।

476

श्री सुभाष यादव, उप मुख्य मंत्री भी राजी
विजय लक्ष्मी साधो, मंत्री जी की हाँ जी।

477

एम.एल.ए. सम्मिलित, पूर्व के, वर्तमान के
सभी समर्थन में, विचार सब के समान थे।

478

अति विशिष्ट, गणमान्य सभी के मन में भी यह
नाम सभी के लेना, यहाँ नहीं है सम्भव।

479

करी घोषणाएँ कुछ ने, तत्काल यहाँ पर
स्थापित हो उद्यान में, श्री राजेन्द्र वीरवर।

480

श्रमजीवी संघर्ष भूमि, निमाड़ की प्यारी
सहज सरलता मन में, धर्मनिष्ठ संस्कारी।

481

युवा शक्ति आएगी, यहाँ प्रेरणा लेगी
जनहित में सत्पथ का, रुचिकर मार्ग चुनेगी।

482

सोलह जून का दृश्य, यहाँ अनुपम अपार था
ग्राम घुघरिया खेड़ी में, पूरा निमाड़ था।

483

संध्या के पहले, अग्नि संस्कार कराया
पंचतत्व में विलीन, वीर राजन की काया।

484

दे आहुति स्वयं की, बाँटे दिव्य उजाले
देश प्रेम के बीज, युवा पीढ़ी में डाले।

485

अभी मात्र देखे बसन्त, कुल हुए तीस थे
मात-पिता भारत माँ के, आशीष शीश पे।

486

समूचे ग्राम वासियों के, अति प्रिय चहेते
समय-बेसमय इनसे, सभी मदद थे लेते।

487

जब अवकाश खत्म कर, वे ड्यूटी पर जाते
बड़े-बजुर्गों के छू चरण, आशीषें पाते।

488

बस टेशन पथ, दस मिनटों में जहाँ पहुँचते
कुशल-क्षेम लेते सब की, दो घंटे लगते।

489

पुण्य दिवस यह, सदा-सदा सब याद रखेंगे
अब हर वर्ष इसी दिन, जन-जन यहाँ जुटेंगे।

490

सोलह जून का यह दिन, अविस्मरणीय होगा
यादगार स्मारक, रमणीय सा यहाँ बनेगा।

491

पुण्यदिवस यह सदा, सभी को याद रहेगा
ये निमाड़ प्रतिवर्ष उन्हें, श्रद्धांजलि देगा।

492

देश-प्रेम के पथ से, राजन स्वर्ग सिधारे
तन से दूर, रहेंगे मन में, सदा हमारे।

493

मिला हमें सौभाग्य, देवभूमि में जन्मे
और परम् सौभाग्य, बुद्धि पाई इस तन में।

494

जन्मे जिस भूमि पर, उसका कर्ज चुकाएँ
मातृभूमि के लिए, समर्पित हम हों जाएँ।

495

देशद्रोही शत्रु से, सदा सतर्क रहें हम
हो कर सजग, मित्र-बैरी में फर्क करें हम।

496

पुण्यमयी पुरुषार्थ, जगत में कुछ कर जाएँ
भारत माँ का दामन, खुशियों से भर जाएँ।

497

तन-मन से जन-जन की, सेवा प्यार करें हम
सत्कर्मों से हर मन में, सद्भाव भरें हम।

498

नव पीढ़ी को देश प्रेम का, पाठ पढ़ाएँ
सद्कर्मों से जीवन में, सार्थकता पाएँ।

499

बना हुआ है सुंदर सा, शहीद स्मारक
रमणीय सा उद्यान, गाँव में जन सुख कारक।

500

होते हैं प्रतिवर्ष यहाँ, सार्थक आयोजन
श्रद्धांजलि दे कर, शहीद का करते वंदन।

501

बार-बार जयकार, वीर की हृदय उचारे
जन्म-भूमि निमाड़ में, फैलाये उजियारे।

502

अमर शहीद राजेन्द्र, न विस्मृत कभी रहेगा
बलिदानी गाथाओं में, वह जीवित रहेगा।

503

'नजर लगे ना, शूरवीर सुत मेरा बाँका
भारत माँ ने, अपने आँचल से है ढाँका।'

504

'फिर राजेन्द्र जन्म लेगा, इस दिव्य धरा पर
पुष्प खिलेंगे फिर, निमाड़ की वसुंधरा पर।'

505

अब की बार तिरंगे में, न लिपट आएगा
लिए तिरंगा हाथों में, वह लहरायेगा।

506

अब की बार न, माँ बापू बहनें रोएँगी
जनता अपने, वीर लाल को ना खोएगी।

507

अब की बार न, मित्र मंडली मौन रहेगी
बचपन के किस्सों की, सरिता खूब बहेगी।

508

अब की बार उदासी के, नहीं दृश्य मिलेंगे
धरा-गगन होंगे खुश, सुरभित पुष्प खिलेंगे।

509

अब की बार न साँझ, अंधेरा घोर रहेगा
जब आएगा राजन, स्वर्णिम भोर रहेगा।

510

अब की बार भी परिजन, यही रहेंगे सारे
पर इस बार सभी, सुख वैभव साथ तुम्हारे।

511

दीर्घ काल तक सुख, भोगेगा अभी स्वर्ग में
लौटेगा वह अपनी, माँ के पुनः गर्भ में।

512

भारत माँ ने हम सब को, आश्वस्त किया है
था प्रारब्ध कटा, यह शुभ वरदान दिया है।

513

सदियों में संयोग बने, रिश्तों-नातों के
किंवदंतियाँ सुनीं, बुजुर्गों की बातों से।

514

पुनर्जन्म सिद्धांत, कर्म पर आधारित है
मान्य उन्हें जो, हिंदु धर्म में संस्कारित है।

515

जैसा करें भरेंगे वैसा, अटल सत्य है
होते फलित भाव, जैसे हम करें कृत्य हैं।

516

लिपिबद्ध होता जाए, मष्तिष्कीय मन में
तद्नुसार मिलते रहते, सुख-दुख जीवन में।

517

कर्मबन्धनों के अबूझ हैं, खेल निराले
आपस में उलझे, जैसे मकड़ी के जाले।

518

सपनों का संसार, मोहनी भ्रामक माया
हैं अनभिज्ञ, हो रही प्रतिपल जर्जर काया

519

करें कर्म ऐसे, जीवन सार्थक हो जाए
पुण्यभूमि भारत माता को, शीश नवाएँ

520

लें संकल्प देश हित, तत्पर सदा रहेंगे
जिएँ देश के लिए, देश के लिए मरेंगे।

521

जय जय भारत माता का, वंदन अभिनंदन
श्रद्धानत हो शीश, समर्पित अक्षत-चंदन।

समापन

पारिवारिक छायाचित्र

23/05/2013

निमाड़ का अमर शहीद राजेन्द्र यादव

30 मई 1999 बीसवीं सदी के आखिरी महीनों में किसने सोचा था कि निमाड़ के एक छोटे से गाँव 'घुघरिया खेड़ी' की धरती का सपूत मातृभूमि पर हँसते-हँसते अपने प्राण निछावर कर देगा। वह भी भारत-पाकिस्तान के निर्णायक युद्ध में। हिमालय के इस 15000 फीट ऊँचे ठंडे स्थान बर्फ से ढँके कारगिल में। शरीर गोलियों से छलनी होते हुए भी अंतिम समय में जो अपने ग्रेनेड से दुश्मन के चार-पाँच जवानों को ठिकाने लगाने में भी नहीं चूकता, फिर स्वयं भी भारत माता की गोद में सदा-सदा के लिये सो जाता है। पता नहीं उस समय राजेन्द्र के मन में क्या चल रहा होगा? मैं सोचता हूँ शायद उस समय एक क्षण में भारत माता की वह तस्वीर सामने आई होगी, जिसकी सेवा का उसने प्रण लिया था। मेरी भारत माता आजाद रहेगी तो सब ठीक होगा। मेरी अर्द्धांगिनी के पेट में जो अंश पल रहा है, उसको गहरी छाया तो माँ भारती के चरणों में ही मिलेगी और वह भारत माता की जय कहकर बेफिक्र हो रुख्सत हुआ होगा।

उस दिन ऐसे अमर शहीद राजेन्द्र यादव के बलिदान से निमाड़ की माटी धन्य हुई। राजेन्द्र यादव आसमान के उन तारों के बीच जाकर बैठ गया था, जहाँ कभी ध्रुव बैठा था। सिर्फ दिक् और काल बदला था। इसी दिन माँ की कोख अमर हुई थी, पिता का दृढ़ संकल्प पूरा हुआ था, पत्नी का हौसला बुलन्द हुआ था। अंश का भविष्य तय हुआ था। सबसे ऊपर जन्मभूमि का सिर ऊँचा हुआ था। इस दिन आसमान से फूल बरस रहे थे, धरती गीत गा रही थी। निमाड़ की मिट्टी का एक-एक कण जय-जयकार कर रहा था। उसका बेटा आज शहीद हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति के लिये जैसे गौरव स्वयं सामने आकर

खड़ा हो गया था। यह दुर्लभ गर्व का अवसर राजेन्द्र अपनी शहादत से जुटा गया था।

16 जून 1999 को जिस दिन वीर योद्धा राजेन्द्र का शव उसके गाँव आया था, उस दिन उसके दर्शन के लिये पूरा निमाड़ उमड़ पड़ा था। राजनेताओं से लगाकर कवि, लेखक, पत्रकार, सम्पादक और साधारण जन इकट्ठा हुए थे। सबकी आँखें नम थीं और सिर नत मस्तक थे। माँ को भरोसा नहीं हो रहा था, उसका बेटा तिरंगे में लिपटा घर लौटेगा। पिता बेहाल थे। बहनों के आँसू नहीं रुक रहे थे। पत्नी, पति को इस अवस्था में देखकर बेसुध हो रही थी। हर कोई राजेन्द्र के जाने के गम में विगलित हो रहा था। कोई भी उस समय ऐसा व्यक्ति न होगा, जिसकी आँखें राजेन्द्र की कृतज्ञता के लिये भर न गई हों। वह मातृभूमि का कर्ज चुका गया था। उसके चरणों में मेरा शत्-शत् नमन।

महाभारत के श्रीकृष्ण को पूजने वाले यादव परिवार में जन्मे राजेन्द्र ने फिर एक योद्धा की असल भूमिका निभाई है। फिर अधर्म को धर्म ने हराया है। फिर एक अर्जुन विजेता हुआ। राजेन्द्र ने एक अमिट इतिहास रचा है, निमाड़ की धरती पर। हजारों-हजारों को अपने त्याग से प्रेरणा दे गया। लाखों मातृभूमि पर मरने वालों को एक सीख दे गया। निमाड़ की मिट्टी को चंदन कर गया।

राजेन्द्र के परिवार का कोई प्रसिद्ध इतिहास नहीं था। न घर में कोई पढ़ा-लिखा था। फिर सेना में भर्ती होने की प्रेरणा राजन ने कहाँ से पाई? संभवतया पिछले जन्म की कुछ इसी तरह की देनदारियाँ थीं इसलिए वह नव जवान स्वप्रेरणा से सेना में भर्ती होने चला गया और लांस नायक के पद पर चुना गया। यह कोई दुर्लभ संयोग ही था। वर्ना निमाड़ जैसे क्षेत्र में सेना में जाने का विचार ही महत्वपूर्ण हो उठता है। जिसे राजेन्द्र ने अपने प्रारब्ध के बल पर पूरा किया था। निमाड़ के युवाओं के लिये राजेन्द्र एक सबक भी सिखा गया- राष्ट्र पहले है, उसके बाद सब कुछ है।

राजेन्द्र अपनी स्वयं की अपने आप में इतनी बड़ी इबारत लिख गया कि कोई लिखने वाला स्वयं धन्य हो जाये। काव्य, महाकाव्य बन जाये।

खरगोन के पास के एक छोटे से गाँव नागझिरी के रहने वाले निमाड़ी और हिंदी के सुप्रसिद्ध वरिष्ठ कवि श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' ने राजेन्द्र यादव

को ऐसी ही अपनी काव्यांजलि अर्पित की है। इतिवृत्त तो छोटा है, लेकिन कवि सुरेश तन्मय ने अपनी कल्पनाशीलता से उसे अत्यंत विस्तृत मार्मिक-साहित्यिक ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। मैं इनकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए राजेन्द्र के इस त्याग की कथा घर-घर दोहराई जाने की कामना करता हूँ-

कारगिल में दुश्मन को पीछे खदेड़ते।
हुए शहीद, अंत तक राजन लड़ते लड़ते।।
ग्राम घुघरिया खेड़ी, धन्य-धन्य यह भूमि।
वीर भूमि की माटी, यह जन-जन ने चूमी।।

कवि की इन उपरोक्त काव्य पंक्तियों के साथ जहाँ तक मैं कवि सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' को जानता-समझता हूँ, उनसे और उनकी कविताओं से बहुत पहले से परिचित और प्रभावित हूँ। तन्मय मूलत: कवि हैं। वे कविता के भीतर और बाहर के अलावा कुछ भी नहीं देखना चाहते हैं। कविता उनके लिए संजीवनी है। वे अपनी सुविधा से निमाड़ी कविता के साथ ही बहुतायत से हिन्दी की समसामयिक कविता गीतों का सृजन करते हैं। निमाड़ी से उन्हें कवि होने के संस्कार मिले हैं और हिन्दी से साहित्य में संरचना के संस्कार अर्जित करने का सौभाग्य। निमाड़ी उनकी मातृ बोली है और हिन्दी मातृभाषा। एक लोक को समझने का अवसर देती है तो दूसरी साहित्य के आलोक में प्रकाशित होने का व्यापक अवसर प्रदान करती है।

सुरेश तन्मय की विशेषता यह है कि दोनों जगह अपने श्रेष्ठ कवि होने का प्रमाण देते हैं। चाहे छंद हो या कविता अथवा गद्य-रचना, सबमें कुशवाहा की कवि प्रतिभा का कौशल आकर्षित करता है। भावों की गहराई, कल्पना की ऊँची उड़ान और शब्दों का उपयुक्त संचयन कविता-गीत दोनों में संतुलित देखा जा सकता है।

वे निमाड़ी में संस्कृति के कवि हैं और हिन्दी में प्रकृति के कवि हैं। निमाड़ी रचनाओं में लोक की स्वच्छंद उन्मुक्त प्रवृति को मर्यादाओं की सीमा के बाहर नहीं जाने देते। लोक के कोमल, खरे और टटकेपन को भी कुशवाहा का कवि टच करता है और निमाड़ी बोली के सौंदर्य बोध को रचनाओं में स्वाभाविक रूप से पिरोते चलता है। हिन्दी की रचना में कुशवाहा मनुष्य प्रवृत्ति

के नजदीक के कवि लगते हैं। चाहे गीत, गजल, लम्बी गाथा हो अथवा कविता, हायकु, मुक्त छंद, लघुकथाएँ हों, सब में कुशवाहा जी कलम चलाते नजर आते हैं। मानवीय सुख-दुख, सामाजिक, राजनैतिक सरोकारों, धार्मिक आस्थाओं के आडम्बरों के विरुद्ध आवाज लगाती कविताओं में कुशवाहा विद्रोही स्वर के कवियों की अग्रणी पंक्ति में बैठे नजर आते हैं। बेबाक अभिव्यक्ति इनके हिन्दी काव्य की विशेषता है। मंचीय सस्ती कविता से कुशवाहा सदैव बचते रहे हैं। गंभीर और सार्थक कविता के साथ सुरेश तन्मय सदैव खड़े रहे हैं।

जो कविता करे वह कवि और जो गद्य लिखे वह लेखक, ऐसा अव्यवहारिक विभाजन मुझे कभी नहीं भाया। एक लेखक कवि नहीं हो सकता और एक कवि लेखक नहीं हो सकता यह तो बेमानी है। अरे कवि हुए बगैर कोई लेखक कैसे हो सकता है? मेरा मानना है कि लेखक होने के लिये भी पहले काव्यगत भावुकता होना जरूरी है। अन्यथा निखालिस गद्य भी खोखला ही होता है। मैं गद्यकार कुशवाहा की बात कर रहा हूँ जो लघुकथा, कहानी, आलेख, व्यंग्य और संस्मरण भी लिखते हैं। इनकी एक हिन्दी लघुकथा तो महाराष्ट्र के शासकीय स्कूली पाठ्यक्रम की कक्षा नौंवी में सम्मिलित है। लगभग अर्द्धशताधिक सम्मान प्राप्त सुरेश तन्मय की अभी तक इस राजेन्द्र गाथा सहित 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें- एक-निमाड़ी काव्य संग्रह, एक-लघुकथा संग्रह, दो-बालगीत संग्रह, चार-हिंदी काव्य संग्रहों के प्रकाशन के अलावा हाइकु संग्रह व दोहा संग्रह की दो पांडुलिपि प्रकाशन के लिए लगभग तैयार हैं।

शारीरिक अस्वस्थता के बाद भी सुरेश कुशवाहा अभी भी निमाड़ी और हिन्दी दोनों में सृजनरत हैं। इसका प्रमाण शहीद राजेन्द्र यादव की हिन्दी में 521 पदों में रची गई खंडकाव्य की यह सद्य प्रकाशित रचना है, जो उन्हें महती प्रतिष्ठा दिलाने वाली है।

मंगल कामनाओं सहित

-बसंत निर्गुणे
भोपाल

सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

जन्म : 01 जनवरी 1950, (ग्राम नागझिरी), जिला-खरगोन, मध्यप्रदेश। निवास : भोपाल म.प्र./अलीगढ़ (उ.प्र.)
शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी साहित्य एवं समाजशास्त्र), आयुर्वेद रत्न, आर.एम.पी.। **विधा :** गीत, नवगीत, बाल कविता, दोहे, हाइकु, लघुकथा आदि।
प्रकाशन : 'प्यासो पणघट' -निमाड़ी काव्य संग्रह, 'आरोह-अवरोह'-हिंदी गीत काव्य संग्रह, 'अक्षर दीप जलाये'-बाल कविता संग्रह, 'शेष कुशल हैं'-पत्र शैली में कविता संग्रह, 'अंदर एक समन्दर'-लघुकथा संग्रह, 'बचपन रसगुल्लों का दोना'-बाल गीत संग्रह, 'यह बगुला मन'-गीत-नवगीत संग्रह, 'साझा गीत अष्टक'-(10, गीत), भोपाल, 'दोहा दोहा नर्मदा', साझा संकलन (110 दोहे) जबलपुर। **प्रकाशनाधीन :** 1-नवगीत संग्रह, 2-दोहा संग्रह, 3-हाइकु संग्रह। 'भावांजलि' कारगिल शहीद राजेन्द्र यादव गाथा, संवेदना (पथिकृत मानव सेवा संघ की पत्रिका का संपादन), साहित्य संपादक- रुचिर संस्कार मासिक, जबलपुर साहित्य। साहित्य संपादक-रंग संस्कृति त्रैमासिक, भोपाल। देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में तथा आकाशवाणी/ दूरदर्शन भोपाल से हिंदी एवं लोकभाषा निमाड़ी में प्रकाशन-प्रसारण। **विशेष :** सन 2017 से महाराष्ट्र शासन के शैक्षणिक पाठ्यक्रम कक्षा-नवम् की 'हिंदी लोक भारती' पाठ्यपुस्तक में एक लघुकथा 'रात का चौकीदार' सम्मिलित। लघुकथाओं का बुंदेली व पंजाबी में अनुवाद। **सम्मान :** विभागीय राजभाषा गौरव सम्मान, प्रज्ञा रत्न सम्मान, सरस्वती प्रभा सम्मान, पद्यकृति पवैया सम्मान, विद्या वाचस्पति सम्मान, शब्द प्रवाह सम्मान, कादम्बिनी साहित्य सम्मान भोपाल, लघुकथा यश अर्चन सम्मान, गणगौर सम्मान-निमाड़ लोक संस्कृति न्यास खंडवा, साहित्य प्रभाकर सम्मान, निमाड़ी लोकसाहित्य सम्मान- महेश्वर, साहित्य भूषण, वर्तिका राष्ट्रीय साहित्य शिरोमणि सम्मान-जबलपुर, मातृभाषा गौरव सम्मान-अ. भा.सा. परिषद-जबलपुर सहित अन्य अर्द्धशताधिक विविध सम्मान/अलंकरण।
संप्रति : भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स प्रतिष्ठान भोपाल के नगर प्रशासन विभाग से जनवरी 2010 में सेवा निवृत्ति।
सम्पर्क : बी-101, महानंदा ब्लॉक, विराशा हाइट, दानिश कुंज ब्रिज, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) मो. 9893266014

उषा बाबू सिंह ठाकुर
मंत्री
संस्कृति, पर्यटन, अध्यात्म
मध्यप्रदेश

निवास : बी-20, चार इमली, भोपाल, पिन-462016
दूरभाष क्र. 0755-2551976, 2777723
Email : minister.tcamp@gmail.com
पत्र क्रमांक 2057/मंत्री/सं.प.आ./2021
भोपाल, दिनांक 21/12/21

संदेश

हमारे अनेक वीर सेनानियों ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की आहूति दी एवं अपना सर्वस्व देश के लिए न्यौछावर कर दिया।

ऐसे सेनानियों के रक्त-रंजित इतिहास एवं स्वतंत्रता संघर्ष की गाथाओं से देश की युवा पीढ़ी को परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है। इससे उनमें देशभक्ति की भावना जागृत होगी।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत जननायकों, महापुरुषों, शहीदों, क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की जन्म एवं कर्मस्थली पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। इसी कड़ी में साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा निमाड़ गौरव, कारगिल युद्ध हुतात्मा राजेन्द्र यादव स्मृति 'भावांजलि' का प्रकाशन अनुकरणीय प्रयास है।

साहित्य अकादमी अमृत महोत्सव के अंतर्गत ऐसी ही प्रेरक पुस्तकों का प्रकाशन करती रहेगी, इन्हीं शुभकमानाओं के साथ।

(उषा बाबू सिंह ठाकुर)

प्रकाशक
साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश शासन
संस्कृति विभाग, भोपाल